लखनऊ
शनिवार, 27 जून, 2026
वर्ष : 11 | अंक: 301
मूल्य : 1 रुपये
पृष्ठ : 8
UPHIN/2014/57034
हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

₹हर कठिनाई में एक सबक छिपा होता है, बस देखने की नज़र चाहिए।₹

TODAY WEATHER

DAY 41° Hi
NIGHT 29° Low

संक्षेप

घर की पाबंदी और 30 लाख के कर्ज में डूबी बेटी ने किया पूरे परिवार का कत्ल, बेंगलुरु ट्रिपल मर्डर केस में बड़ा खुलासा

बेंगलुरु। कर्नाटक के बेंगलुरु के पास केआर पुरम इलाके में सॉफ्टवेयर इंजीनियर सोमासुंदरम (55) और उनकी पत्नी मुथुलक्ष्मी (48) रहते थे। उनकी दो बेटियां थीं, श्वेता (24) और सुप्रिया (20)। श्वेता को छोड़कर, परिवार के बाकी तीनों सदस्यों की 22 जून की रात सीगेहल्ली के एक अपार्टमेंट में बेरहमी से हत्या कर दी गई थी। मुथुलक्ष्मी और सुप्रिया की मौके पर ही मौत हो गई, वहीं सोमासुंदरम गंभीर रूप से घायल और जिंदगी के लिए संघर्ष करते हुए मिले। पड़ोसियों ने उन्हें अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उनकी भी मौत हो गयी। इस मामले में पुलिस ने सनसनीखेज खुलासा किया है। पुलिस के पुलिस ने इस तिहरे हत्याकांड के मुख्य संदिग्धों, श्वेता और केनेथ को पकड़ने के लिए एक विशेष टीम बनाई थी। श्वेता को 23 जून को पुडुचेरी रेलवे स्टेशन के पास से गिरफ्तार किया गया था। पूछताछ के दौरान, उसने जांचकर्ताओं को यह कबूल कर चौंका दिया कि उसने खुद अपने पिता, मां और छोटी बहन को चाकू मारकर मौत के घाट उतारा था। तमिलनाडु और कर्नाटक की पुलिस ने केनेथ को खोजने के लिए छह विशेष टीमें बनाई थीं। गुरुवार की रात करीब 10 बजे उन्हें सूचना मिली कि वह पुडुचेरी के अन्ना सलाई इलाके में छिपा हुआ है। इसके बाद, ओरलियनपेट पुलिस ने कड़ी निगरानी रखी और रात करीब 1:00 बजे केनेथ को गिरफ्तार कर लिया। शुरुआती जांच से पता चला है कि बड़ी बेटी श्वेता घटना से दो महीने पहले अपने बॉयफ्रेंड केनेथ के साथ उस अपार्टमेंट में रहने आई थी। जब उसके माता-पिता उससे मिलने वहां पहुंचे, तो उनके बीच झगड़ा शुरू हो गया। इसके बाद उसने अपने ही परिवार के सदस्यों की हत्या कर दी और अपने बॉयफ्रेंड के साथ मौके से भाग गई।

US नागरिकता छोड़ पैतृक गांव लौटीं आंध्र प्रदेश की 94 साल की बुजुर्ग, बोलीं- भारतीय बनकर मरना चाहती हूं

अमरावती। आमतौर पर अमेरिका या कनाडा जैसे देशों में बसना कई भारतीयों के लिए गर्व और सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय माना जाता है। लेकिन, 94 वार्षिय एक महिला ने यह साबित कर दिया है कि मातृभूमि से बढ़कर दुनिया में कोई और जगह नहीं होती। 94 वर्षीय अमेरिकी नागरिक कोंड्रागुंटा महालक्ष्मा ने भारत सरकार से अपील की है कि उनकी भारतीय नागरिकता बहाल की जाए। उन्होंने भावुक होते हुए कहा है कि उनकी अंतिम इच्छा आंध्र प्रदेश के अपने पैतृक गांव में एक भारतीय के रूप में मरने की है। यह अनूठा मामला हाल ही में बापटला के जिला कलेक्टर वी. विनोद कुमार के समक्ष कलेक्ट्रेट के पीजीआरएस हॉल में सुनवाई के लिए आया। अधिकारियों द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, चिन्नागंजम मंडल के चिंथागुमपाला गांव की मूल निवासी महालक्ष्मा अपने पति नागभूषणम के निधन के बाद अमेरिका चली गई थीं। वहां वह अपने बेटे और कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. के. बुचैया चौधरी के साथ रह रही थीं। जुलाई 2000 में उन्होंने अमेरिका की नागरिकता भी हासिल कर ली थी।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामला

रामभक्तों की अग्निपरीक्षा न लें, सबूत है तो एसआईटी को दें: सीएम योगी

आर्यावर्त क्रांति

देवरिया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले पर कहा, एसआईटी की रिपोर्ट आते ही कार्रवाई शुरू हो गई है। जन आस्था के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं है। दूध का दूध और पानी का पानी होगा। सीएम योगी ने यह बातें देवरिया में 456 करोड़ रुपये से अधिक लागत की विभिन्न विकास परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यक्रम में कहीं।

सीएम योगी ने समाजवादी पार्टी और कांग्रेस पर हमला बोलते हुए कहा, एक पक्ष कहता था कि राम हैं ही नहीं यानी अयोध्या को भी ये लोग नकारना चाहते थे। लगातार न्यायालय में मुकदमा लड़ते रहे, वकीलों की फौज राम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण के खिलाफ खड़ी करते रहे और दूसरा पक्ष वो है जो जय श्री राम बोलने पर लाठी और गोली चलाते थे। भगवान राम का नाम लेने पर जो लोग गोली चलाते थे आज वे कहते हैं कि आस्था के साथ खिलवाड़ हुआ।

अरे तुम हमें आस्था बताओगे? राम नवमी पर दंगा करवाते थे, श्री कृष्ण जन्मोत्सव को प्रतिबंधित करते थे, कांवड़ यात्रा को नहीं निकलने देते थे, दुर्गा पूजा में दंगा करवाते थे... याद कीजिए कांग्रेस ने देश को लूटा ही नहीं था, नोंचा था। बेइमानी और भ्रष्टाचार के जो कीर्तिमान स्थापित किए थे और वे लोग आज अयोध्या पर आक्षेप लगा रहे हैं? ये स्वीकार्य नहीं।

सरकार की जो मंशा है, सरकार ने पहले दिन कहा कि दूध का दूध और पानी का पानी सभी के सामने आएगा। लेकिन मैं फिर से अपील करूंगा कि राम भक्तों की अग्नि परीक्षा मत लो, उनकी आस्था के साथ खिलवाड़ करना बंद कीजिए। अगर तथ्य या प्रमाण नहीं है तो आरोप-प्रत्यारोप बंद करो और प्रमाण हैं तो एसआईटी के सामने पेश करो।

बिना नाम लिए केजरीवाल पर भी साधा निशाना

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा, 'दिल्ली से भी एक सज्जन वहां (अयोध्या) आए हैं आज। मैं उनसे भी कहना चाहूंगा कि दिल्ली की जनता ने उन्हें कई वर्षों तक अवसर दिया लेकिन उन्होंने दिल्ली को भ्रष्टाचार के अलावा कुछ नहीं दिया। अगर यही न्याय जो अयोध्या के साथ डबल इंजन की भाजपा सरकार ने किया है, आम आदमी पार्टी दिल्ली के साथ करती तो दिल्ली भी ऐसे ही चमकती जैसे अयोध्या धाम चमक रहा है।'

रामलला के दरबार पहुंचे दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, बोले- सुख-समृद्धि की कामना की

आर्यावर्त क्रांति

अयोध्या। दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल शुक्रवार को रामनगरी अयोध्या पहुंचे। सुबह करीब 11 बजे उन्होंने रामलला के दरबार में दर्शन-पूजन किया। इसके बाद वो हनुमानगढ़ी मंदिर में दर्शन करने पहुंचे। उनके साथ आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद संजय सिंह भी मौजूद रहे। दर्शन से पहले केजरीवाल ने कहा कि वह भगवान राम से देशवासियों की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना करेंगे। उन्होंने बताया कि रामलला के दर्शन के बाद वह हनुमानगढ़ी जाकर पूजा-अर्चना करेंगे। इसके उपरांत संत-महात्माओं से मुलाकात का भी उनका कार्यक्रम है। अयोध्या दौरे के दौरान पार्टी के अन्य पदाधिकारी और कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। केजरीवाल ने कहा कि अयोध्या आकर रामलला के दर्शन करना उनके लिए सौभाग्य की बात है।

राम मंदिर चंदा विवाद : ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने दिया इस्तीफा, अनिल मिश्रा ने भी छोड़ा पद

आर्यावर्त क्रांति

अयोध्या। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने इस्तीफा दे दिया है। अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा चोरी का मामला सामने आने के बाद उनपर इस्तीफे का दबाव था। वह विपक्ष के निशाने पर थे। चंपत के अलावा ट्रस्ट के सदस्य अनिल मिश्रा ने भी इस्तीफा दे दिया है। ट्रस्ट के सदस्य कृष्ण मोहन की तहरीर पर रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव, अनुकल्प मिश्र, अविनाश शुक्ला, करुणेश पांडेय, लवकुश मिश्र, रमाशंकर मिश्र, सुभाष श्रीवास्तव तथा मनीष कुमार यादव नामक व्यक्तियों और कुछ अज्ञात लोगों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस ने बताया कि विशेष जांच दल (एसआईटी) की ओर से 23 जून को सरकार को सौंपी गई प्रारंभिक रिपोर्ट में कठोर कार्रवाई की सिफारिश की गई है,

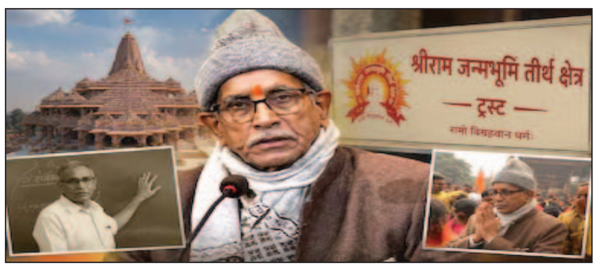

जिसके आधार पर यह एक्शन लिया गया। सूत्रों के अनुसार चोरी, आपराधिक विश्वासघात और आपराधिक षड्यंत्र समेत विभिन्न आरोपों में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत मामला दर्ज किया गया है। अयोध्या के राम मंदिर में कथित दान और चढ़ावा चोरी का मामला सामने आने के बाद ट्रस्ट ने विशेष जांच का अनुरोध किया था जिसके बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रकरण की जांच के लिए 13 जून को एसआईटी का गठन किया गया था। एसआईटी में लखनऊ मंडलायुक्त विजय विश्वास पंत, पुलिस महानिरीक्षक किरण एस और वित्त विभाग के विशेष सचिव नील रतन शामिल हैं। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने इस मामले को सात जून को एक खबर का हवाला देते हुए उठाया और उन्होंने इसमें न्यायिक हस्तक्षेप की मांग की थी। बाद में इस मामले ने राजनीतिक तूल पकड़ लिया।

ड्रग माफियाओं पर बड़ा प्रहार : अमित शाह ने जारी किया नया रोडमैप, छह हजार करोड़ के नशीले पदार्थ किए गए नष्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। देश में नशीले पदार्थों के कारोबार के खिलाफ केंद्र सरकार अपनी कार्रवाई को और तेज करने जा रही है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह शुक्रवार को नारको-कोऑर्डिनेशन सेंटर (एनसीओआरडी) की 10वीं शीर्ष-स्तरीय बैठक की की। इस दौरान उन्होंने 'नारकोटिक्स कंट्रोल विजन डॉक्यूमेंट 2026-2029' जारी किया। इससे देश को ड्रग्स मुक्त बनाने के लिए अगले तीन वर्षों का रोडमैप तय किया गया। बैठक में केंद्र और राज्य सरकारों के साथ विभिन्न जांच एजेंसियों के वरिष्ठ अधिकारी शामिल रहे।

गृह मंत्रालय और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की ओर से आयोजित इस बैठक का मुख्य उद्देश्य देशभर में ड्रग तस्करी और नशीले पदार्थों के दुरुपयोग के खिलाफ चल रहे अभियानों की समीक्षा करना और उन्हें और मजबूत बनाना है। बैठक में विभिन्न मंत्रालयों, राज्य सरकारों और ड्रग कानून लागू करने वाली एजेंसियों के प्रतिनिधि हिस्सा लेंगे। सरकार का कहना है कि ड्रग्स के खिलाफ जीरो-टॉलरेंस नीति को और प्रभावी बनाने के लिए सभी एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय जरूरी है।

नए विजन डॉक्यूमेंट में क्या होगा खास?

'नारकोटिक्स कंट्रोल विजन डॉक्यूमेंट 2026-2029' में नशीले पदार्थों की मांग कम करने, तस्करी की सप्लाई चेन तोड़ने और नशे के शिकार लोगों के पुनर्वास पर विशेष जोर दिया जाएगा। इसके साथ ही यह दस्तावेज आने वाले वर्षों में ड्रग्स के खिलाफ राष्ट्रीय रणनीति का आधार बनेगा। विजन डॉक्यूमेंट में नई चुनौतियों से निपटने की रणनीति भी शामिल की गई है।

अमित शाह ने क्या कहा

सभी संबंधित एजेंसियों और अधिकारियों को एनसीबी की वार्षिक रिपोर्ट को ध्यान से पढ़ना चाहिए।
अगले एक वर्ष में किसी भी सूचकांक (इंडिकेटर) में गिरावट नहीं आनी चाहिए।
हर मानक में उल्लेखनीय सुधार होना चाहिए और यह अगले वार्षिक रिपोर्ट में भी दिखाई देना चाहिए।
नशीले पदार्थों के खिलाफ लड़ाई खुफिया जानकारी (इंटेलिजेंस) आधारित होनी चाहिए।
ड्रग तस्करी से निपटने के लिए नेटवर्क-केंद्रित (नेटवर्क-सेंट्रिक) रणनीति के साथ आगे बढ़ना होगा।
नशे के कारोबार के खिलाफ लड़ाई में कठोर और निर्दयी रवैया अपनाना जरूरी है।
केवल सख्त और समन्वित कार्रवाई के जरिए ही इस चुनौती पर विजय हासिल की जा सकती है।

हम आपकी आधी उम्र तक भी नहीं पहुँच पाए : पवन खेड़ा ने धर्मेंद्र प्रधान को नीट मृतकों के नाम गिनाए

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने शुक्रवार को केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान पर निशाना साधा। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'X' पर प्रधान को दी गई जन्मदिन की शुभकामनाओं का जवाब देते हुए एक पोस्ट किया, जिसमें NEET की तैयारी करने वाले कई ऐसे छात्रों के नाम थे जिनकी मौत हो चुकी है। इससे पहले दिन में, मोदी ने प्रधान को जन्मदिन की बधाई दी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) को लागू करने में उनके प्रयासों की तारीफ़ की। प्रधानमंत्री ने X पर लिखा कि केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान जी को जन्मदिन की बधाई। वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू करने की दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहे हैं, जिसका मकसद भारत को ज्ञान, शिक्षा और इनोवेशन का केंद्र बनाना है। उनके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ। इस पोस्ट का जवाब

देते हुए खेड़ा ने लिखा कि प्रिय धर्मेंद्र अंकल, जन्मदिन की बधाई। आज आप 57 साल के हो गए हैं। हम तो आपकी आधी उम्र तक भी नहीं पहुँच पाए।

उन्होंने उस मैसेज के साथ उन स्टूडेंट्स के नामों की लिस्ट भी शेयर की जिनकी मौत हो चुकी थी और जो NEET की तैयारी कर रहे थे। इनमें रितिक मिश्रा, अंशिका पांडे, भाग्यश्री, उमेश माली, रिया कुमारी थापा, अनुकीर्तना, रीमा बेगम, सिद्धार्थ हेगड़े, प्रदीप मेघवाल, शिवानी यादव, रेणु मीणा, आकांक्षा, कहन पटेल और मैथिली सोनवणे शामिल हैं। खेड़ा का यह पोस्ट ऐसे समय में आया है जब विपक्ष लगातार केंद्र सरकार की आलोचना कर रहा है। यह आलोचना कॉम्पिटिटिव एग्ज़ाम में कथित गड़बड़ियों और NEET की तैयारी करने वाले स्टूडेंट्स समेत कई स्टूडेंट्स की मौत की खबरों को लेकर हो रही है। इससे एक दिन पहले, कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भी प्रधान पर तीखा हमला किया।

छत्तीसगढ़ के Bastar में नक्सलियों पर डबल स्ट्राइक, भारी हथियार और 24 Lakh Cash बरामद

नई दिल्ली, एजेंसी। पुलिस ने शुक्रवार को बताया कि सुरक्षा बलों ने छत्तीसगढ़ के नारायणपुर ज़िले के जंगलों में छिपे माओवादियों के दो ठिकानों से बड़ी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद, विस्फोटक सामग्री और 24 लाख रुपये नकद बरामद किए हैं। अधिकारियों ने बताया कि 31 मार्च को छत्तीसगढ़ को हथियारबंद नक्सलवाद से मुक्त घोषित किए जाने के बाद बस्तर क्षेत्र में तलाशी अभियान तेज़ कर दिया गया है। टीमें माओवादियों द्वारा पहले छिपाए गए नकदी, हथियारों और विस्फोटकों का पता लगाने की कोशिश कर रही हैं। बस्तर में सात ज़िले शामिल हैं, जिनमें नारायणपुर भी है। पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि खास खुफिया जानकारी के आधार पर, इस हफ़्ते की शुरुआत में ओरछा और छोटेडोंगर पुलिस थाना क्षेत्रों में अलग-अलग तलाशी अभियान चलाए गए।

बंगाल में यूसीसी लागू करने की तैयारी, भाजपा सरकार अगले हफ्ते विधानसभा में पेश करेगी विधेयक

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल में सत्ता में आई भाजपा सरकार राज्य में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने की तैयारी कर रही है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी मौजूदा विधानसभा सत्र में एक विधेयक पेश कर सकते हैं। पार्टी नेताओं ने संकेत दिया है कि बंगाल में सरकार की प्राथमिकता वाले विधायी उपायों में विधानसभा के समक्ष यूसीसी विधेयक पेश करना शामिल होगा। भाजपा ने चुनाव के दौरान अपने संकल्प पत्र (घोषणा पत्र) में भी इसे लेकर प्रतिबद्धता जताई थी।

संभावना है कि विधेयक को अगले हफ्ते सोमवार को विधानसभा में पेश किया जाएगा, जिस पर बहस हो सकती है। इस पर ममता बनर्जी से बगावत करने वाले तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) विधायकों का रुख देखने वाला होगा।

बता दें, बंगाल चुनाव के दौरान संकल्प पत्र जारी करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने वादा किया था कि सरकार बनते ही 6 महीने में यूसीसी लागू करेंगे। टीएमसी ने अपने घोषणापत्र में इसे न लागू करने की बात कही थी। यूसीसी के तहत देश के सभी वर्गों पर एक समान कानून लागू होगा। अभी देश में विवाह-तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने जैसे मुद्दों पर सभी धर्मों के अपने-अपने कानून हैं और वे उन्हीं को मानते हैं। यूसीसी लागू होने पर सभी धर्मों को इन मुद्दों पर एक कानून को मानना होगा। उत्तराखंड ने सबसे पहले फरवरी 2024 में अपना यूसीसी विधेयक पारित किया था। इसके बाद गुजरात ने इस साल मार्च में और मई में असम ने इसे लागू किया।

पहली बार सामने आए ऑपरेशन सिंदूर के 6 शहीदों के नाम, राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में मिली जगह

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत सरकार ने पहली बार उन शहीदों के नाम सार्वजनिक कर दिए हैं, जिन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर में अपनी जान गंवाई थी। शहीदों के विवरण अब सेना युद्ध स्मारक की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। इन वीर जवानों में से 2 को वीर चक्र और वायु पदक से सम्मानित किया गया है। इन 6 सैनिकों के नाम नई दिल्ली में इंडिया गेट के पास स्थित राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में विशेष ग्रेनाइट पट्टिकाओं पर स्थायी रूप से अंकित होगा।

शहीद जवानों में 10 इन्फैंट्री ब्रिगेड मुख्यालय के सब मेजर पवन कुमार, जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट की चौथी बटालियन के राइफलमैन सुनील कुमार, 5वीं फील्ड रेजिमेंट के

लांस नायक दिनेश कुमार, 851 लाइट रेजिमेंट से अग्निवीर मूड मुरली नायक, 237 फील्ड वर्कशॉप के हवलदार सुनील कुमार सिंह और वायुसेना की 39वीं विंग के सार्जेंट सुरेंद्र कुमार शामिल हैं। राइफलमैन सुनील कुमार को मरणोपरान्त देश के तीसरे सर्वोच्च युद्ध सम्मान वीर चक्र और सार्जेंट सुरिंदर कुमार को वायु पदक मिला है।

रिपोर्ट्स के मुताबिक, 6 में से अधिकांश जम्मू-कश्मीर में शहीद हुए हैं। सुनील कुमार पाकिस्तान से सटी नियंत्रण रेखा पर तैनात थे। बता दें कि सभी शहीदों के नाम राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में दिखाई देंगे। यहां ग्रेनाइट की ईंटों से निर्मित 16 संकेंद्रित वृत्ताकार दीवारें हैं। प्रत्येक ईंट पर स्वतंत्रता के बाद से सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीद का नाम, पद और रेजिमेंट अंकित हैं।

पाकिस्तान आतंकियों ने 22 अप्रैल को पहलगाम की बैसरन घाटी में गोलीबारी करके 26 पुरुष पर्यटकों को उनके परिवारों के सामने मार डाला था। इसके बाद भारत ने 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया और पाकिस्तान के 6 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। इस दौरान करीब 100 प्रमुख आतंकी मारे गए। पाकिस्तान ने भी भारत को निशाना बनाया, लेकिन हमले असफल रहे। इसके बाद 10 मई को पाकिस्तान ने युद्धविराम की पहल की, जिस पर भारत सहमत हुआ।

भारतीय सेना के हेलीकॉप्टर फायर करेंगे हेलिना मिसाइल, HAL ने BDL को दिया 1,348 करोड़ रुपये का ऑर्डर

नई दिल्ली, एजेंसी। स्वदेशी एंटी-टैंक मिसाइल प्रणाली हेलिना को और मजबूत बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने भारत डायनेमिक्स लिमिटेड को 1,347.71 करोड़ रुपये का ऑर्डर दिया है। इस ऑर्डर के तहत हेलिना मिसाइल लॉन्चर और उससे जुड़े महत्वपूर्ण उपकरणों का निर्माण किया जाएगा। ऑर्डर में 1,109.37 करोड़ रुपये के हेलिना लॉन्चर और लाइन रिप्लेसेबल यूनिट्स (LRUs) शामिल हैं। इसके अलावा हेलीकॉप्टरों की सुरक्षा के लिए 238.34 करोड़ रुपये के काउंटर मेजर्स डिस्पेंसिंग सिस्टम भी तैयार किए जाएंगे। हेलिना यानी हेलीकॉप्टर लॉन्च्ड नाग भारत की स्वदेशी तीसरी पीढ़ी की "फायर एंड फॉरगेट" एंटी-टैंक गाइडेड मिसाइल है।

उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में आने वाला है मानसून, 28 जून से शुरू होगी बारिश

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली और उत्तर प्रदेश समेत उत्तर भारत के अलग-अलग राज्यों में भीषण गर्मी का सामना कर रहे लोगों के लिए खुशी की खबर है। भारतीय मौसम विभाग (आईएमडी) का कहना है कि मानसून अगले 48 घंटे में उत्तर प्रदेश समेत कई राज्यों में पहुंच जाएगा, जिससे गर्मी से राहत मिलेगी। सबसे पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश में बारिश होगी। यहां बिहार के रास्ते मानसून प्रवेश करेगा। ऐसे में देवरिया और महाराजगंज में पहले बारिश की संभावना है। मौसम विशेषज्ञों ने बताया कि उत्तर प्रदेश के पूर्वी जिलों में 28 जून से बारिश शुरू हो जाएगी, जो लगातार 6 दिन तक रुक-रुक कर होती रहेगी। इस बार मानसून अपने निर्धारित समय से 8 दिन देरी से आ रहा है। पहले इसके 21 जून को आने की संभावना थी। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में अभी लू का दौर जारी है। आईएमडी के मुताबिक, दक्षिण-पश्चिम मानसून प्रदेश में प्रवेश करने के उपरान्त तेजी से आगे बढ़ेगा। मौसम विशेषज्ञों के मुताबिक, हिमाचल प्रदेश में 26 से 30 जून तक और पंजाब में 27 और 28 जून को भारी बारिश हो सकती है। हरियाणा, चंडीगढ़ और दिल्ली में अभी मानसून पूर्व बारिश का माहौल है। यहां एक जुलाई के आसपास मानसून पहुंच जाएगा। उत्तराखंड में 27 जून से 1 जुलाई के बीच भारी से बहुत भारी बारिश होगी। मध्य प्रदेश और राजस्थान में भी 25 और 26 जून कई जगह भारी बारिश का आनुमान है।

आयकर जांच में बड़े खुलासे: जौहर ट्रस्ट के नौ सदस्यों में पांच आजम परिवार से, विवि निर्माण में लगाई सरकारी रकम

आर्यावर्त संवाददाता

रामपुर। जौहर ट्रस्ट का रजिस्ट्रेशन रद्द करते हुए आयकर विभाग ने कई अनियमितताओं का जिक्र अपनी रिपोर्ट में किया है। 147 पेज की जांच रिपोर्ट के अनुसार जौहर ट्रस्ट के नौ सदस्यों में पांच आजम के परिवार के हैं। चार बस नाममात्र के हैं। ट्रस्ट पर परिवार का नियंत्रण है। जांच में सरकारी ठेकेदारों ने भी कबूल किया कि उन्होंने सरकारी प्रोजेक्ट के लिए मिली धनराशि का 30 से 40 फीसदी हिस्सा जौहर यूनिवर्सिटी के निर्माण में लगाया है। आयकर विभाग लखनऊ के प्रधान आयुक्त (केंद्रीय) गौरव बॉथम की रिपोर्ट के अनुसार आयकर विभाग की जांच में सामने आया कि जौहर ट्रस्ट को मोहम्मद आजम खां और उनके परिवार के सदस्यों द्वारा नियंत्रित किया जा रहा था। एक ट्रस्टी चौधरी शहरयार सलीम ने 13 सितंबर 2023 को हुई छापेमारी में खुद को नाममात्र का ट्रस्टी स्वीकार किया था। जांच में करोड़ों रुपये की सरकारी राशि के दुरुपयोग का भी खुलासा हुआ है। जिला मूल्यांकन अधिकारी की रिपोर्ट के अनुसार, यूनिवर्सिटी परिसर में 59 इमारतों के निर्माण की लागत 494.46 करोड़ रुपये आंकी गई है। यह राशि ट्रस्ट के बही-खातों में नहीं दिखाई गई थी।

बैठक में बुलाया... दस्तखत लेकर भेज दिया

जांच में सामने आया कि कई लोग सिर्फ नाम के ट्रस्टी थे। इनमें शामिल चौधरी शहरयार सलीम ने अपने बयान में बताया कि वह डमी ट्रस्टी था। उसे जौहर यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर के चयन के लिए आयोजित बैठक में बुलाया गया था और केवल दस्तखत लेकर वापस भेज दिया गया। ट्रस्ट को आजम खान और उनके परिवार के सदस्य ही कंट्रोल और मैनेज करते हैं। वहीं यह भी सामने आया कि रामपुर के कई निजी कंस्ट्रक्शन फर्मों को अलग-अलग सरकारी ठेके दिलाए गए और बाद में उससे ट्रस्ट की संपत्तियां बनवाई गईं। जौहर एसोसिएट्स और सीके एसोसिएट्स ने सरकारी अनुबंध से मिली करीब 86 करोड़ रुपये की सरकारी रकम का गलत इस्तेमाल किया। इसका कोई हिसाब-किताब भी नहीं रखा गया।

यूनिवर्सिटी से ही संचालित होती थीं राजनीतिक गतिविधियां

ट्रस्ट पर राजनीतिक गतिविधियों के लिए परिसर का उपयोग करने का भी आरोप है। ट्रस्ट के सहायक वित्त अधिकारी परवेज मियां ने स्वीकार किया कि संपत्ति का एक हिस्सा समाजवादी पार्टी के कार्यालय के रूप में इस्तेमाल हो रहा था। ट्रस्ट ने इस संपत्ति का कोई किराया नहीं लिया, जिससे आय का नुकसान हुआ। ट्रस्ट ने शैक्षिक उद्देश्य के लिए आवंटित भूमि पर एक मस्जिद भी बनाई, जो शर्तों का उल्लंघन है।

इन दानकर्ताओं का पता नहीं चला

आयकर जांच में जौहर ट्रस्ट ने जिन लोगों से दान मिलने का दावा किया था, उनका जांच में पता हीं नहीं चला। इनमें लखनऊ की पिरामिड कंस्ट्रक्शन एंड सप्लायर्स, मुरादाबाद की सालार ओवरसीज लिमिटेड, दिल्ली की एआर एजूकेशन ट्रस्ट, नोएडा की अर्थ इंफ्राटेक, दिल्ली की रेमिगेट इंफ्रा डेवलपर्स, रॉयल इम्पोरिया फ्रा टेक, मुरादाबाद की फैजा परवीन, बहराइच के मोहम्मद हसीब, रोबोट विनिमय प्राइवेट लिमिटेड, वंडर सप्लायर्स प्राइवेट लिमिटेड और ड्रीम ऑफ पर्ल रियलिटी एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड आदि शामिल हैं।

जौहर ट्रस्ट ने 11 अस्तित्वहीन संस्थाओं से लिया था दान

जांच में सामने आया है कि जौहर ट्रस्ट ने 11 अस्तित्वहीन संस्थाओं से दान लिया। ट्रस्ट के खातों में कई गैर-मौजूदा संस्थाओं से दान दर्शाया गया, जो अनियोजित आय को वैध रूप देने का प्रयास माना गया। जांच में आयकर को ये संस्थाएं नहीं मिलीं। ट्रस्ट के आय-व्यय खाते और बैंक जमा में भारी अंतर पाया गया। जिसे ट्रस्ट साबित नहीं कर पाया। ये बात भी सामने आई है कि ट्रस्ट ने वित्त वर्ष 2021-22 और 2022-23 के लिए आयकर रिटर्न दाखिल नहीं किए थे। टीडीएस में भी अंतर पाया गया। ऑडिटर ने स्वीकार किया कि उन्होंने बिना किसी वास्तविक दस्तावेज (बिल, वाउचर) के, केवल ड्राफ्ट के आधार पर ऑडिट रिपोर्ट तैयार की। बैंक में जमा राशि और आय-व्यय खाते में दिखाई गई आय में बहुत बड़ा अंतर है। उदाहरण के लिए वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए आय 12.83 करोड़ रुपये थी, जबकि बैंक जमा 27.39 करोड़ रुपये दिखाया गया।

बाजार से लौट रहे चाचा-भतीजे का अपहरण,

सुल्तानपुर। देहात कोतवाली क्षेत्र की प्रतापगंज पुलिस चौकी अंतर्गत चाचा-भतीजे के साथ मारपीट और अपहरण का सनसनीखेज मामला सामने आया है। आरोप है कि 24 जून की सुबह अहिमाने बाजार से घर लौटते समय दबंगों ने दोनों को जबरन अगवा कर लिया और घर ले जाकर पेड़ से बांधकर बेरहमी से पीटा। घटना के बाद पीड़ितों में दहशत का माहौल है। पीड़ित पक्ष के अनुसार, बाजार से वापस लौटते समय पहले से घात लगाए बैठे नामजद आरोपियों ने रंजिशन रास्ता रोक लिया। इसके बाद दोनों को जबरन अपने साथ ले गए और पेड़ से बांधकर लाठी-डंडों से मारपीट की। किसी तरह दोनों के छूटने पर परिजनों को घटना की जानकारी हुई, जिसके बाद पुलिस से शिकायत की गई। देहात कोतवाली पुलिस ने पीड़ित की तहरीर के आधार पर नामजद आरोपियों के विरुद्ध संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है।

ज्योति सिंह ने राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र पचमढ़ी से प्रशिक्षण प्राप्त कर रचा इतिहास

पचमढ़ी में ज्योति सिंह ने रचा इतिहास, बनीं सुलतानपुर की पहली लीडर ट्रेनर गाइड

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। जनपद सुलतानपुर के लिए गौरव का क्षण तब आया जब भारत स्काउट एवं गाइड उत्तर प्रदेश की जिला ट्रेनिंग कमिश्नर (गाइड) ज्योति सिंह ने मध्य प्रदेश स्थित राष्ट्रीय प्रशिक्षण केंद्र पचमढ़ी में आयोजित उच्च स्तरीय प्रशिक्षण सफलतापूर्वक पूर्ण कर लीडर ट्रेनर गाइड की प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त की। इस उपलब्धि के साथ ही ज्योति सिंह सुलतानपुर की पहली लीडर ट्रेनर गाइड बन गई हैं,जिससे जिले के स्काउट-गाइड आंदोलन को नई पहचान मिली है।

ज्योति सिंह की इस ऐतिहासिक सफलता पर जिला मुख्य आयुक्त एवं जिला विद्यालय निरीक्षक सूर्य प्रकाश सिंह,सह जिला विद्यालय निरीक्षक जटाशंकर यादव ,जिला कमिश्नर स्काउट डॉ. दिनेश प्रताप सिंह एवं सचिव डॉ गुलाब सिंह ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इसे पूरे जनपद के लिए गर्व का विषय बताया। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि स्काउट-गाइड गतिविधियों को नई दिशा प्रदान करेगी। जिला ट्रेनिंग कमिश्नर स्काउट धर्मेंद्र प्रताप सिंह, जिला संगठन कमिश्नर गौरव सिंह एवं जिला संगठन आयुक्त (गाइड) कांती सिंह ने भी ज्योति सिंह को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। जिला प्रशिक्षण टीम एवं स्काउट-गाइड परिवार के सदस्यों ने कहा कि उनकी सफलता युवाओं और गाइड्स के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगी तथा प्रशिक्षण गतिविधियों को और अधिक सशक्त बनाएगी।आपको बता दें उत्तर प्रदेश से ज्योति सिंह समेत चार महिलाओं ने लीडर ट्रेनर गाइड का उच्च स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त किया हैं। ज्योति सिंह की इस उपलब्धि से जनपद के स्काउट-गाइड कार्यकर्ताओं में उत्साह का माहौल है और इसे जिले के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में देखा जा रहा है।

पहले जमकर खाया खाना, पैसे देने की आई नौबत तो कर दिया बवाल ; ढाबे में तोड़फोड़, गाड़ी कर दी क्षतिग्रस्त

आर्यावर्त संवाददाता

मथुरा। मथुरा के थाना नौहझील क्षेत्र में एक ढाबे पर खाना खाने के बाद पैसे मांगने को लेकर दबंगों द्वारा जमकर उत्पात मचाया। उन्होंने ढाबे में तोड़फोड़ की और वहां खड़ी संचालक की गाड़ी को क्षतिग्रस्त कर दिया। विरोध करने पर ढाबा कर्मचारियों के साथ लाठी-डंडों व सरियों से मारपीट भी की। पीड़ित ढाबा संचालक की तहरीर पर स्थानीय पुलिस ने दो नामजद आरोपियों सहित उनके अन्य साथियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

गांव नावली निवासी वृजेश कुमार ने पुलिस को दी तहरीर में बताया कि वह गांव मकरन्दगढ़ी-चांदपुर कलां मार्ग पर अपना ढाबा चलाते हैं। बीते 22 जून 2026 की शाम करीब 8 बजे पालखेड़ा निवासी विन्नो और दिलीप उनके ढाबे पर खाना खाने आए थे। खाना खाने के बाद जब ढाबे के कर्मचारी ने उनसे खाने के पैसे मांगे तो दोनों दबंगई दिखाने लगे। उन्होंने गाली-गलौज करनी शुरू कर दी। ढाबा संचालक वृजेश कुमार ने बीच-बचाव करते हुए मामला शांत कराने का प्रयास किया। आरोप है कि इसके बाद आरोपियों ने फोन करके अपने कुछ अज्ञात साथियों को मौके पर बुला लिया।

इसके बाद आरोपियों ने ढाबे में जमकर तोड़फोड़ की। दबंगों ने ढाबे के पास खड़ी संचालक की गाड़ी को भी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त कर दिया। विरोध करने पर कर्मचारियों सतवीर और दीपक पर लाठी, डंडों और लोहे के सरियों से हमला कर दिया, जिससे वे घायल हो गए। जाते-जाते आरोपी पीड़ित पक्ष को जान से मारने की धमकी भी दे गए। घटना के बाद पीड़ित ने तुरंत डायल 112 पर फोन कर पुलिस को मामले की सूचना दी। सीओ अमरनाथ यादव ने बताया कि पीड़ित की तहरीर पर प्राथमिकी दर्ज कर जांच पड़ताल शुरु कर दी गई है।

यमुना एक्सप्रेसवे पर हादसा, डिवाइडर से टकराई बाइक, नोएडा से फिरोजाबाद लौटते दो युवकों की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

खंदौली (आगरा)। यमुना एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार को हुए सड़क हादसे में बाइक सवार दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई। नोएडा से फिरोजाबाद लौट रहे दोनों युवकों की बाइक खंदौली थाना क्षेत्र में अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक और दोनों युवक करीब 20 मीटर तक सड़क पर फिसलते चले गए।

सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। हादसे की खबर मिलते ही स्वाजन घटनास्थल पर पहुंच गए। दोनों की मौत से परिवार में कोहराम मच गया। दीपक पुत्र रामनरेश, निवासी कृष्णा नगर, थाना उत्तर, जनपद फिरोजाबाद, नोएडा के सेक्टर-59 स्थित एक एक्सपोर्ट कंपनी में हेल्पर के रूप में कार्य करता था। उसके पास ही उसकी बुआ का बेटा राजा, निवासी थाना हसराबाद , जनपद अलीगढ़, रहकर कक्षा 10 की पढ़ाई कर रहा था।

शुक्रवार को दोनों बाइक से नोएडा से अपने घर फिरोजाबाद के लिए निकले थे। जैसे ही उनकी बाइक खंदौली थाना क्षेत्र में यमुना एक्सप्रेसवे के 155वें किलोमीटर के पास अचानक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में बाइक और दोनों युवक करीब 20 मीटर तक सड़क पर फिसल गए, जिससे दोनों की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलते ही खंदौली पुलिस मौके पर पहुंच गई और दोनों शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं दुर्घटना की सूचना पर मृतकों के स्वाजन भी घटनास्थल पर पहुंच गए। अपनों की असमय मौत से परिवार में मातम छा गया। पुलिस हादसे के कारणों की जांच कर रही है।

वन विभाग की मिलीभगत या लापरवाही, धड़ल्ले से कट रहे सागवान के बेशकीमती पेड़

कादीपुर/सुलतानपुर। एक तरफ जहां शासन-प्रशासन पर्यावरण संरक्षण और वनीकरण को बढ़ावा देने के बड़े-बड़े दावे करता है, वहीं सुलतानपुर जिले के कादीपुर क्षेत्र में वन विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो गए हैं। कादीपुर वन क्षेत्राधिकार कार्यालय से महज 10 किलोमीटर की दूरी पर मुड़ली बाजार के बगल गांव वारी में पिछले कई दिनों से सागवान के बेशकीमती पेड़ों पर अवैध रूप से आरा चल रहा है, लेकिन विभाग की चुप्पी कई तरह के संदेह पैदा कर रही है। जब स्थानीय लोगों ने इस अवैध कटान की जानकारी वन विभाग को दी, तो विभाग का जवाब हैरान करने वाला था। अधिकारियों का दावा है कि इन पेड़ों को काटने के लिए 10 पेड़ों की अनुमति (परमीशन) दी गई थी। हालांकि, घटनास्थल पर मौजूद कटे हुए पेड़ों के लट्ठों का अंबार विभाग के इस दावे की पोल खोल रहा है। स्थानीय प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि यदि केवल 10 पेड़ों की अनुमति थी।

चौपाल पर बैठे दादा को दी खौफनाक मौत, पहले मारी गोली फिर चाकू से गोदकर की हत्या, दो पोते फरार

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ जिले के सरूरपुर क्षेत्र के करनावल कस्बे में जमीन के विवाद ने रिश्तों को इस कदर शर्मसार कर दिया कि दो पौत्रों ने अपने ही 82 वर्षीय दादा की बेरहमी से हत्या कर दी। आरोप है कि दोनों ने पहले चौपाल पर बैठे दादा के सीने में गोली मारी और फिर चाकू से कई वार कर उनकी जान ले ली। पुलिस ने सीसीटीवी के आधार पर दोनों आरोपियों की पहचान कर उनके खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली है। उनकी तलाश में कई दल लगातार दबिश दे रहे हैं।

पुलिस के अनुसार बृहस्पतिवार रात भोजन करने के बाद विजयपाल गांव की चौपाल पर पहुंचे थे। वहां वह दो ग्रामीणों के साथ बैठकर हुक्का पी रहे थे। इसी दौरान दो नकाबपोश युवक वहां पहुंचे और बिना कुछ कहे विजयपाल के सीने में गोली मार दी। गोली लगते ही वहां अफरा-तफरी मच गई और साथ बैठे लोग जान बचाकर भाग निकले।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार गोली लगने के बाद विजयपाल जमीन पर गिर पड़े। इसके बाद भी हमलावर नहीं रुके और उन्होंने चाकू से लगातार कई वार किए। शोर सुनकर ग्रामीण मौके की ओर दौड़े, लेकिन तब तक दोनों आरोपी अंधेरे का लाभ उठाकर फरार हो चुके थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को परीक्षण के लिए भेज दिया।

सीसीटीवी रिकॉर्डिंग से खुला राज

घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी, वैज्ञानिक साक्ष्य दल और स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची। आसपास लगे चित्रांकन यंत्रों की रिकॉर्डिंग की जांच में दोनों आरोपियों की पहचान मृतक के पौत्र निक्की और सागर के रूप में हुई। मृतक के पौत्र भानू की शिकायत पर दोनों के खिलाफ हत्या का अभियोग दर्ज किया गया है। पुलिस की तीन टीमें आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए लगातार दबिश दे रही हैं।

20 बीघा जमीन के लालच में रची गई साजिश

पुलिस जांच में सामने आया कि विजयपाल के पास कुल 80 बीघा कृषि भूमि थी। उन्होंने संपत्ति का बंटवारा करते हुए तीन हिस्से अपने बेटों के परिवारों को दे दिए थे, जबकि 20 बीघा जमीन अपने भरण-पोषण के लिए अपने पास रखी थी। करीब एक वर्ष पहले घरेलू विवाद के बाद विजयपाल अपने दिवंगत बेटे के परिवार के साथ रहने लगे थे। चर्चा थी कि वह अपने हिस्से की बची 20 बीघा जमीन भी उसी परिवार के नाम करने की तैयारी में थे। इसी बात को लेकर परिवार में लंबे समय से विवाद चल रहा था। पुलिस के अनुसार इसी रंजिश के चलते दोनों पौत्रों ने मिलकर हत्या की साजिश रची और वारदात को अंजाम दिया।

अलीगंज अग्निकांड के बाद बड़ा फैसला, यूपी में फायर एनओसी के बिना नहीं मिलेगा बिजली कनेक्शन और बिजनेस लाइसेंस

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। उत्तर प्रदेश में फायर सेफ्टी नियमों को लेकर योगी सरकार ने बड़ा और सख्त फैसला लिया है। अब अग्निशमन विभाग की अनापत्ति प्रमाणपत्र (एनओसी) के बिना किसी भी भवन को न तो बिजली का नया कनेक्शन मिलेगा और न ही उसमें कॉमर्शियल गतिविधियों के लिए व्यापार लाइसेंस जारी किया जाएगा।

सरकार ने स्पष्ट किया है कि अवैध रूप से चल रही व्यावसायिक गतिविधियों पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय करते हुए उनके खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाएगी। वहीं, गलत तरीके से फायर एनओसी जारी करने वाले अधिकारियों की भी जिम्मेदारी तय होगी।

यह निर्णय अलीगंज अग्निकांड जैसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के उद्देश्य से लिया गया है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा 23 जून को दिए गए निर्देशों के पालन में अपर मुख्य सचिव (गृह) संजय प्रसाद ने सभी संबंधित विभागों को बैठक की कार्यवाही भेज दी है। आवास एवं शहरी नियोजन विभाग के प्रमुख सचिव पी। गुरूप्रसाद ने सभी विकास प्राधिकरणों के उपाध्यक्षों, आवास आयुक्त तथा विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरणों के अध्यक्षों को जारी शासनादेश में निर्देश दिए हैं कि फायर विभाग, विकास प्राधिकरण, नगर निगम और बिजली विभाग के अभिलेखों का एकीकरण किया जाए, ताकि बिना फायर एनओसी वाले भवनों को बिजली कनेक्शन या व्यापार लाइसेंस जारी न हो सके।

हर जिले में बनेगी टास्क फोर्स, चलेगा सेफ्टी ऑडिट अभियान

सरकार ने सभी जिलों में टास्क फोर्स गठित कर व्यापक फायर सेफ्टी ऑडिट अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। इसके तहत अस्पतालों, नर्सिंग होम, मेडिकल कॉलेजों, कोचिंग संस्थानों, लाइब्रेरी, शॉपिंग मॉल, बहुमंजिला इमारतों, सरकारी कार्यालयों, छात्रावासों तथा अन्य व्यावसायिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों की जांच कर अग्नि सुरक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित कराया जाएगा।

आवासीय भवनों में व्यावसायिक गतिविधियों पर सख्ती

शासन ने स्पष्ट किया है कि भवनों में प्रवेश और निकास के लिए अलग-अलग मार्ग अनिवार्य होंगे। सभी कोचिंग संस्थानों का पंजीकरण कराया जाएगा तथा आवासीय भवनों में व्यावसायिक गतिविधियों पर रोक सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा पार्किंग के लिए स्वीकृत बेसमेंट का उपयोग कोचिंग सेंटर, लाइब्रेरी या अन्य व्यावसायिक गतिविधियों के लिए करने पर भी सख्ती से रोक लगाने के निर्देश दिए गए हैं।

15 मीटर तक के भवनों के लिए सेल्फ सर्टिफिकेशन

सरकार ने 15 मीटर से कम ऊंचाई वाले भवनों के लिए सेल्फ सर्टिफिकेशन व्यवस्था लागू करने का निर्णय लिया है। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि भवनों में स्वीकृत बिजली कनेक्शन के अनुरूप ही विद्युत भार का उपयोग हो। विकास प्राधिकरणों को निर्देश दिए गए हैं कि वे भवनों में संचालित व्यावसायिक गतिविधियों का सर्वे कर आवश्यकतानुसार नोटिस जारी करें और कंपाउंडिंग की कार्रवाई करें। साथ ही सभी विभागों को अपनी आपातकालीन सेवाओं की तैयारियों की समीक्षा करने और उन्हें और

कड़ी सुरक्षा में निकला ताजिया, कई गांवों में गम–ए–हुसैन की गूंज

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। मोहर्रम की दसवीं तारीख यौम-ए-आशूर पर ताजखानपुर, बहादुरपुर और अफलेपुर गांवों में गम-ए-हुसैन पूरे अकीदत और अनुशासन के साथ मनाया गया। इमामबारगाह से ताजिया जुलूस निकाला गया, जो निर्धारित मार्गों से होते हुए स्थानीय कर्बला पहुंचा। यहां मातमी नौहों और सीनाजनी के बीच ताजिया सुपुर्द-ए-खाक किया गया।जुलूस के दौरान या हुसैन की सदाओं के बीच अजादारों ने इमाम हुसैन (अ.स.) और कर्बला के शहीदों की कुर्बानी को याद कर उन्हें खिराज-ए-अकीदत पेश किया। जुलूस में बड़ी संख्या में नौजवान,बुजुर्ग और बच्चों ने भाग लिया। श्रद्धालुओं के लिए विभिन्न स्थानों पर लंगर और शरबत की व्यवस्था भी की गई। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद रहा। कोतवाली प्रभारी एवं गभड़िया चौकी प्रभारी दिवेश त्रिवेदी के नेतृत्व में भारी पुलिस बल तैनात रहा। इमामबारगाह से कर्बला तक पूरे मार्ग पर पुलिस और महिला पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई। ड्रोन कैमरों से भी जुलूस की निगरानी की गई, जबकि यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त यातायात पुलिस बल लगाया गया। प्रशासन और अंजुमन के पदाधिकारियों के बेहतर समन्वय से तीनों गांवों में ताजिया जुलूस शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। पूरे आयोजन के दौरान कहीं से भी किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं मिली। अजादारों ने इमाम हुसैन (अ.स.) की कुर्बानी को इंसानियत,सब्र और सत्य के लिए संघर्ष का प्रतीक बताते हुए उनके बताए रास्ते पर चलने का संदेश दिया।

पहले की सरकार हर जिले में माफिया पालती थी, हमने मेडिकल कॉलेज दिए: सीएम योगी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री ने एस्ट्रोमेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के लोकार्पण समारोह में स्वास्थ्य सेवाओं में हुए बदलाव को सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धि बताते हुए विपक्ष पर तीखा हमला बोला। उन्होंने कहा कि पिछली सरकारें प्रदेश के प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज नहीं दे सकीं, बल्कि 'हर जिले में एक माफिया पालने' का काम करती थीं, जबकि उनकी सरकार ने 'वन डिस्ट्रिक्ट-वन मेडिकल कॉलेज' की अवधारणा को साकार कर प्रदेश की तस्वीर बदल दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2017 से पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था बदहाल थी। उस समय गोरखपुर का बीआरडी मेडिकल कॉलेज स्वयं बीमार था। उन्होंने कहा कि बीमार मेडिकल कॉलेज नहीं था, बल्कि तत्कालीन सरकारों की मानसिकता बीमार थी, जिसने पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोगों को इलाज के अभाव में मरने के लिए छोड़ दिया था। स्वास्थ्य और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में कोई ठोस कार्य नहीं किया गया।

उन्होंने कहा कि आज प्रदेश के लगभग हर जिले में मेडिकल कॉलेज संचालित हो रहे हैं। गोरखपुर के साथ-साथ महाराजगंज, कुशीनगर, देवरिया, अंबेडकरनगर, बलिया, गाजीपुर, सुल्तानपुर, रायबरेली, अमेठी, प्रतापगढ़, मिर्जापुर और चंदौली सहित सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज स्थापित किए जा चुके हैं और वहां पढ़ाई तथा अस्पताल दोनों संचालित हो रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले पूर्वी उत्तर प्रदेश के मरीज इलाज के लिए दिल्ली, मुंबई और लखनऊ की ओर पलायन करने को मजबूर थे। एम्स दिल्ली में पूर्वांचल और बिहार के मरीजों की लंबी कतारें लगी रहती थीं क्योंकि क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव था। उन्होंने याद दिलाया कि वर्ष 2005 में गोरखपुर में आईसीयू, डायलिसिस और प्लेटलेट्स सेपरेशन जैसी बुनियादी सुविधाएं तक उपलब्ध नहीं थीं।

वर्ष 2007 में गोरखनाथ चिकित्सालय में पहला 10 बेड का आईसीयू, पहली डायलिसिस मशीन और पहली ब्लड सेपरेटर यूनिट स्थापित कराई गई थी। आज गोरखपुर में दो दर्जन से अधिक अस्पताल अत्याधुनिक आईसीयू सुविधाओं से लैस हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य केवल मुफ्त इलाज नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण और विश्वसनीय स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है। आयुष्मान भारत योजना और राज्य सरकार की योजनाओं के माध्यम से प्रदेश में लगभग 12 करोड़ लोगों को निशुल्क उपचार की सुविधा मिल रही है। मुख्यमंत्री राहत कोष से भी हर वर्ष 1200 से 1500 करोड़ रुपये गंभीर बीमारियों से जूझ रहे गरीब मरीजों के इलाज पर खर्च किए जा रहे हैं।

मार्कण्डेय चन्द को सीएम ने दी श्रद्धांजलि

मुख्यमंत्री ने एस्ट्रोमेडिक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल की सराहना करते हुए कहा कि गोरखपुर के हृदयस्थल बेतियाहाता में स्थापित यह अस्पताल फोर्टिस हॉस्पिटल के सहयोग से संचालित होगा और सुपर स्पेशियलिटी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराएगा। उन्होंने अस्पताल के संस्थापक स्वर्गीय मार्कण्डेय चन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने शून्य से शिखर तक का सफर तय किया और जीवनभर गोरखपुर तथा गोरक्षपीठ के प्रति अपनी निष्ठा बनाए रखी। मुख्यमंत्री ने कहा कि स्वर्गीय मार्कण्डेय चन्द के पुत्र सीपी चन्द और डॉ. अरुण चन्द ने अपने पिता की स्मृति को जीवंत रखते हुए पूर्वांचल को आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं का नया केंद्र दिया है।

प्रयागराज में ए.के. शर्मा की अधिकारियों को दोटूक हिदायत, बिजली आपूर्ति

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने शुक्रवार को प्रयागराज दौरे के दौरान ऊर्जा विभाग, नगर विकास विभाग और विकास प्राधिकरण के कार्यों की विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को जनहित से जुड़े सभी कार्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध ढंग से पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि विकास कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही या देरी स्वीकार नहीं की जाएगी और कार्यों में शिथिलता बरतने वाले अधिकारियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

सर्किट हाउस सभागार में आयोजित समीक्षा बैठक में ऊर्जा विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए मंत्री ने प्रदेशवासियों को निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने

अधिकारियों को निर्देश दिए कि बिजली आपूर्ति से संबंधित किसी भी शिकायत का तत्काल निस्तारण किया जाए और आम नागरिकों को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों की मांग पर स्वीकृत अथवा निर्माणाधीन विद्युत परियोजनाओं को युद्धस्तर पर पूरा किया जाए, ताकि लोगों को समय पर बेहतर सुविधाएं मिल सकें।नगर विकास विभाग और विकास प्राधिकरण की समीक्षा के दौरान ए.के. शर्मा ने प्रयागराज में चल रही सभी निर्माणाधीन परियोजनाओं की प्रगति का जायजा लिया।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आगामी माघ मेले से पहले सभी महत्वपूर्ण परियोजनाओं को हर हाल में पूरा किया जाए। साथ ही सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) से जुड़े कार्यों में तेजी लाकर उन्हें निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करने के निर्देश भी दिए।मंत्री ने कहा कि महाकुंभ से पहले शहर के जिन प्रमुख चौराहों का सौंदर्यीकरण किया गया था, उनका पुनः निरीक्षण कर आवश्यक सुधार सुनिश्चित किए जाएं ताकि शहर की सुंदरता और व्यवस्थाएं बेहतर बनी रहें। उन्होंने वर्षाकाल को देखते हुए सभी प्रमुख नालों की समयबद्ध सफाई कराने के निर्देश देते हुए कहा कि जलभराव की समस्या से नागरिकों को हर हाल में राहत मिलनी चाहिए।ब

पंचायत चुनाव टालने पर हाईकोर्ट सख्त, सरकार से मांगी ओबीसी आयोग की रिपोर्ट

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने उत्तर प्रदेश में पंचायत चुनाव में हो रही देरी और ग्राम प्रधानों को प्रशासक बनाए रखने के संबंध में राज्य सरकार के आदेशों पर कड़ी टिप्पणी करते हुए कहा है कि प्रथम दृष्टया ये आदेश ऐसे प्रावधान के तहत जारी किए गए हैं, जिसे पहले ही असंवैधानिक घोषित किया जा चुका है। न्यायालय ने स्पष्ट किया कि ऐसी स्थिति में ग्राम प्रधानों को प्रशासक के रूप में कार्य जारी रखने की अनुमति नहीं दी जा सकती।न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की एकल पीठ ने अरविंद राठौर बनाम उत्तर प्रदेश सरकार एवं अन्य याचिका पर सुनवाई करते हुए राज्य सरकार को अंतिम अवसर देते हुए निर्देश दिया कि यदि अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) आयोग ने अपनी रिपोर्ट तैयार कर ली है तो उसे विस्तृत शपथपत्र के साथ न्यायालय में प्रस्तुत

किया जाए। साथ ही पंचायत चुनाव कराने की समयबद्ध कार्ययोजना भी दाखिल की जाए।न्यायालय ने यह भी कहा कि यदि अगली सुनवाई तक आवश्यक जानकारी प्रस्तुत नहीं की गई तो उत्तर प्रदेश सरकार के संबंधित अधिकारी (प्रतिवादी संख्या-2) को स्वयं न्यायालय में उपस्थित होना होगा। उन्हें व्यक्तिगत शपथपत्र दाखिल कर यह भी स्पष्ट करना होगा कि उन्होंने ऐसे कानूनी प्रावधान के आधार पर आदेश क्यों जारी किए, जिसे पहले ही हाईकोर्ट की खंडपीठ असंवैधानिक घोषित कर चुकी है। न्यायालय ने चेतावनी दी कि ऐसा न करने की स्थिति में इसे प्रथम दृष्टया न्यायालय की अवमानना माना जा सकता है। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से बताया गया कि सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों के अनुपालन में उत्तर प्रदेश सरकार ने ओबीसी आरक्षण से जुड़े मुद्दों के परीक्षण के लिए आयोग का गठन किया है।

मोहनलालगंज में ट्रेन की चपेट में आने से महिला की मौत, पुलिस सभी पहलुओं से कर रही जांच

लखनऊ। राजधानी के मोहनलालगंज थाना क्षेत्र में रेलवे ट्रैक पर ट्रेन की चपेट में आने से एक महिला की मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और गंभीर रूप से घायल महिला को उपचार के लिए अस्पताल भिजवाया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है।पुलिस के अनुसार 25 जून की शाम करीब सात बजे मोहनलालगंज रेलवे स्टेशन से रेलकर्मी ने सूचना दी कि ट्रेन संख्या 14216 डाउन के गुजरने के दौरान थाना मोहनलालगंज क्षेत्र के ग्राम बिदौवा के पास एक महिला रेलवे ट्रैक पर आ गई, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई।सूचना मिलते ही मोहनलालगंज थाना पुलिस मौके पर पहुंची और 108 एम्बुलेंस की सहायता से घायल महिला को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, मोहनलालगंज पहुंचाया गया।

जमीन विवाद में ताबड़तोड़ फायरिंग, अवैध पिस्टल के साथ दो आरोपी गिरफ्तार, 6 नामजद समेत 25 लोगों पर मुकदमा

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। राजधानी के दुबग्गा थाना क्षेत्र में जमीन के विवाद को लेकर हुई ताबड़तोड़ फायरिंग के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपियों में से एक के कब्जे से अवैध .32 बोर पिस्टल बरामद हुई है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है, जबकि घटना में शामिल अन्य नामजद एवं अज्ञात आरोपियों की तलाश में लगातार दबिश दी जा रही है।पुलिस के अनुसार ग्राम छंदोईया निवासी सैफ खान ने थाना दुबग्गा में तहरीर देकर बताया कि 26 जून को जमीनी विवाद के चलते विपक्षी पक्ष के लोग एक राय होकर अवैध असलहों से लैस होकर पहुंचे। आरोपियों ने गाली-गलौज करते हुए जान से मारने की नीयत से फायरिंग

शुरू कर दी। घटना के दौरान सैफ खान और उसका मित्र अकरम बाल-बाल बच गए, लेकिन गोलियों से सैफ खान की स्प्लेंडर मोटरसाइकिल, मकान की दीवार और मुख्य गेट क्षतिग्रस्त हो गए। जाते समय आरोपियों ने जान से मारने की धमकी भी दी।पीड़ित की तहरीर के आधार पर दुबग्गा थाने में मुकदमा संख्या 195/2026 दर्ज किया गया। मामले में छह नामजद और 20 से 25 अज्ञात लोगों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत अभियोग पंजीकृत किया गया।विवेचना के दौरान पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर शुक्रवार सुबह लगभग 7:11 बजे सेक्टर-आई स्थित पावर हाउस के पीछे सड़क किनारे से दो आरोपियों को गिरफ्तार किया। गिरफ्तार आरोपियों की पहचान मयंक यादव और नवील के रूप में हुई। तलाशी के दौरान मयंक यादव के कब्जे से एक अवैध .32 बोर पिस्टल बरामद हुई। इसके बाद मुकदमे में आर्म्स एक्ट की धारा 3/25 की भी बढ़ोतरी की गई।

पुलिस जांच में सामने आया कि गिरफ्तार आरोपी मयंक यादव के खिलाफ पहले से भी आपराधिक मामला दर्ज है। उसके विरुद्ध वर्ष 2025 में ठाकुरगंज थाने में मारपीट और अन्य धाराओं में मुकदमा दर्ज हो चुका है।पुलिस ने दोनों आरोपियों को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है। वहीं, घटना में शामिल अन्य नामजद एवं अज्ञात आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की कई टीमें लगातार संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं। अधिकारियों का कहना है कि मामले की विवेचना जारी है और शेष आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

मोबाइल चोरी से साइबर ठगी करने वाले गिरोह का भंडाफोड़

लखनऊ। कमिश्नरेट लखनऊ पुलिस ने मोबाइल चोरी के जरिए साइबर ठगी करने वाले एक संगठित गिरोह का पर्दाफाश करते हुए पांच शातिर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। आरोपी भीड़भाड़ वाले बाजारों और सार्वजनिक स्थानों से मोबाइल फोन चोरी या झपटमारी करते थे और उन्हीं मोबाइल में मौजूद सिम कार्ड के माध्यम से पीड़ितों के बैंक खातों, यूपीआई वॉलेट और इंटरनेट बैंकिंग का दुरुपयोग कर लाखों रुपये की साइबर ठगी को अंजाम देते थे। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से चोरी के मोबाइल, बैंक कार्ड, नकदी, वाहन सहित अन्य सामान बरामद किया है।पुलिस आयुक्त के निर्देश पर अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस उपायुक्त उत्तरी, अपर पुलिस उपायुक्त उत्तरी तथा सहायक पुलिस आयुक्त बीकेटी के पर्यवेक्षण में थाना महिगवां पुलिस और साइबर क्राइम सेल हजरतगंज की संयुक्त टीम ने थाना महिगवां पर दर्ज मुकदमा संख्या 36/2026 का सफल अनावरण किया।

फर्जी बैनामा कर नौ लाख रुपये की ठगी का खुलासा, तीन प्रॉपर्टी डीलर गिरफ्तार

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। राजधानी के मोहनलालगंज क्षेत्र में फर्जी दस्तावेजों के आधार पर दूसरे की जमीन का बैनामा कर करीब नौ लाख रुपये की ठगी करने वाले गिरोह का पुलिस ने पर्दाफाश किया है। मामले में तीन प्रॉपर्टी डीलरों को गिरफ्तार किया गया है। जांच में सामने आया कि आरोपियों ने कूटरचित अभिलेख तैयार कर स्वयं को जमीन का मालिक दर्शाया और पीड़िता से लाखों रुपये लेकर फर्जी बैनामा करा दिया। पुलिस ने तीनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया है।पुलिस के अनुसार जानकीपुरम विस्तार निवासी अनीता सिंह ने थाना मोहनलालगंज में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया था कि उन्होंने 21 जनवरी 2022 को ग्राम सलेमपुर स्थित गाटा संख्या 3116 में 2500 वर्गफुट का

प्लॉट वी-वन इन्फ्रा टेक प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक विपिन तिवारी से खरीदा था। इसके लिए उन्होंने 8.50 लाख रुपये आरटीजीएस के माध्यम से तथा 1.41 लाख रुपये नकद अदा किए थे। बैनामा उपनिबंधक कार्यालय मोहनलालगंज में विधिवत पंजीकृत भी कराया गया था।पीड़िता ने आरोप लगाया कि जब वह निर्माण कार्य शुरू कराने के लिए मौके पर पहुंचीं तो पता चला कि संबंधित भूमि विक्रेता के स्वामित्व में थी ही नहीं। जांच करने पर मालूम हुआ कि जमीन किसी अन्य व्यक्ति के नाम दर्ज है। विरोध करने पर आरोपियों ने उन्हें धमकी भी दी।विवेचना के दौरान पुलिस ने उपनिबंधक कार्यालय से अभिलेख और राजस्व रिकॉर्ड की जांच कराई। जांच में सामने आया कि जिस दस्तावेज के आधार पर आरोपी ने स्वयं को जमीन का स्वामी बताया था, वह पूरी तरह फर्जी और कूटरचित था। जिस अभिलेख का हवाला दिया गया था, वह वास्तव में किसी अन्य गांव और दूसरे गाटा संख्या से संबंधित निकला। वहीं ग्राम सलेमपुर स्थित गाटा संख्या 3116 की भूमि राजस्व अभिलेखों में रामकुमार पुत्र बालकराम सहित अन्य लोगों के नाम दर्ज पाई गई। जांच में यह भी स्पष्ट हुआ कि इस भूमि का कोई हिस्सा कभी भी आरोपी के नाम नहीं हुआ था।पुलिस के अनुसार मुख्य आरोपी विपिन तिवारी पुत्र श्रीधर तिवारी ने फर्जी दस्तावेजों के आधार पर स्वयं को जमीन का मालिक बताते हुए बैनामा निष्पादित किया। इस साजिश में विपिन तिवारी पुत्र रमेश चन्द्र तिवारी तथा रिंकू राजपूत ने गवाह बनकर सक्रिय भूमिका निभाई। पुलिस जांच में यह भी सामने आया कि दोनों को वास्तविक स्थिति की जानकारी थी, इसके बावजूद उन्होंने फर्जी बैनामे में सहयोग किया।

लोकबंधु अस्पताल परिसर स्थित वन स्टॉप सेंटर में शॉर्ट सर्किट से लगी आग, बड़ा हादसा टला

लखनऊ। राजधानी के कृष्णानगर थाना क्षेत्र स्थित लोकबंधु राजनारायण संयुक्त चिकित्सालय परिसर में बने वन स्टॉप सेंटर में शुक्रवार सुबह आग लगने से कुछ देर के लिए अफरा-तफरी मच गई। सूचना मिलते ही पुलिस और अग्निशमन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और त्वरित कार्रवाई करते हुए आग पर पूरी तरह काबू पा लिया। घटना में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है।पुलिस के अनुसार शुक्रवार सुबह करीब 5:30 बजे वन स्टॉप सेंटर में आग लगने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही कृष्णानगर थाना पुलिस तथा अग्निशमन विभाग की टीम तत्काल मौके पर पहुंची और संयुक्त प्रयास से आग को फैलने से रोकते हुए शीघ्र ही बुझा दिया।प्रारंभिक जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट प्रतीत हो रहा है। आग से वन स्टॉप सेंटर में लकड़ी से निर्मित इंटीरियर का एक कॉलम तथा उसके ऊपर की सीलिंग आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त हुई है।

पूर्वोत्तर रेलवे की बड़ी कार्रवाई : दो ट्रेनों से 930 बोतल अधोमानक पानी जब्त, अनधिकृत वेंडर भी पकड़ा गया

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल ने यात्रियों के स्वास्थ्य और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई करते हुए दो ट्रेनों से कुल 930 बोतल अधोमानक पेयजल जब्त किया है। कार्रवाई के दौरान एक अनधिकृत वेंडर को भी पकड़ा गया, जिसे आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के हवाले कर दिया गया।मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक अरिजीत सिंह के निर्देशन में सहायक वाणिज्य प्रबंधक ओंकार नाथ वर्मा ने शुक्रवार को विभिन्न ट्रेनों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ट्रेन संख्या 20103 की पैंट्री कार में बड़ी मात्रा में अधोमानक पेयजल मिलने पर कार्रवाई की गई।रेलवे अधिकारियों के अनुसार ट्रेन संख्या 20103 से 680 बोतल अधोमानक पानी जब्त किया गया। वहीं ट्रेन संख्या 13020 के निरीक्षण में 250 बोतल अधोमानक पानी बरामद हुआ। इस प्रकार दोनों ट्रेनों से कुल 930 बोतल अधोमानक पानी जब्त कर एलपीओ गोंडा में जमा करा दिया गया।निरीक्षण के दौरान ट्रेन संख्या 20103 में एक अनधिकृत वेंडर भी यात्रियों को सामान बेचते हुए पकड़ा गया। उसे तत्काल ऑन-बोर्ड रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) के सुपुर्द कर दिया गया, जहां उसके विरुद्ध नियमानुसार कानूनी कार्रवाई की जा रही है।रेलवे प्रशासन ने कहा कि यात्रियों को सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण खानपान तथा पेयजल उपलब्ध कराना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। किसी भी प्रकार के अधोमानक खाद्य पदार्थ या पेयजल की बिक्री तथा अनधिकृत वेंडरों की गतिविधियों को किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

फन रिपब्लिक मॉल में छाया फुटबॉल का रोमांच, 'फन फुटबॉल फेस्ट' में उमड़ रहे खिलाड़ी और खेल प्रेमी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। राजधानी में फुटबॉल का उत्साह इन दिनों फन रिपब्लिक मॉल में देखने को मिल रहा है। यहां आयोजित 'फन फुटबॉल फेस्ट' में एक ओर जहां युवा खिलाड़ी मैदान पर अपना कौशल दिखा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर फुटबॉल प्रेमी फीफा विश्व कप की झलकियों, विजेता देशों के ध्वज और ट्रॉफी के साथ इस खेल के रोमांच का आनंद उठा रहे हैं। मॉल में फीफा मुकाबलों की विशेष स्क्रीनिंग भी दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है।21 जून से शुरू होकर 25 जुलाई 2026 तक चलने वाले इस फुटबॉल महोत्सव का उद्घाटन उत्तर प्रदेश का अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुके वरिष्ठ फुटबॉलर प्रमोद कुमार मिश्रा ने किया था। आयोजन के बाद से फुटबॉल प्रेमियों में जबरदस्त उत्साह देखने को मिल रहा है और अब तक करीब एक

हजार प्रतिभागी पंजीकरण करा चुके हैं। शुक्रवार से लीग मुकाबलों की शुरुआत भी हो गई है।आयोजकों के अनुसार प्रतियोगिता में लखनऊ की 12 टीमें हिस्सा ले रही हैं। मुकाबले प्रत्येक शुक्रवार, शनिवार और रविवार को आयोजित किए जा रहे हैं। शुक्रवार को अंडर-10, अंडर-12, अंडर-13 और अंडर-14 आयु वर्ग के खिलाड़ियों के बीच रोमांचक मुकाबले खेले गए। प्रतियोगिता आगे बढ़ने के साथ टीमें खिताब जीतने की दौड़ में अपनी जगह मजबूत करने का प्रयास करेंगी।सप्ताह के अन्य दिनों में आम नागरिक और फुटबॉल प्रेमी भी पंजीकरण कराकर विभिन्न फुटबॉल गतिविधियों, स्किल चैलेंज और पेनल्टी शूटआउट जैसी प्रतियोगिताओं में भाग ले सकते हैं। आयोजन स्थल पर अनुभवी कोच भी मौजूद हैं, जो प्रतिभागियों को फुटबॉल की तकनीक, खेल कौशल और बारीकियों की जानकारी दे रहे हैं।फुटबॉल महोत्सव में फीफा विश्व कप के इतिहास को भी आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न वर्षों के विश्व विजेता देशों के ध्वज, ट्रॉफी की प्रतिकृति और फीफा से जुड़ी विशेष सजावट दर्शकों को विश्व कप जैसा अनुभव करा रही है। यही वजह है कि खेल प्रेमियों के साथ-साथ परिवार भी बड़ी संख्या में आयोजन स्थल पर पहुंच रहे हैं।आयोजन का एक और प्रमुख आकर्षण फन रिपब्लिक मॉल में हाल ही में शुरू हुए अंतरराष्ट्रीय खेल ब्रांडों के स्टोर हैं। यहां एडिडास, नाइकी, अंडर आर्मर, एसिक्स, न्यू बैलेंस, लाइफस्टाइल और प्यूमा जैसे प्रमुख स्पोर्ट्स ब्रांड उपलब्ध हैं। इससे खिलाड़ियों और खेल प्रेमियों को एक ही स्थान पर विश्वस्तरीय खेल सामग्री और उपकरणों का अनुभव प्राप्त हो रहा है।आयोजकों का कहना है कि इस महोत्सव का उद्देश्य केवल फुटबॉल प्रतियोगिता आयोजित करना नहीं, बल्कि युवाओं में फिटनेस, अनुशासन, टीम भावना और खेल संस्कृति को बढ़ावा देना भी है। उनका मानना है कि फुटबॉल के प्रति बढ़ते रुझान को देखते हुए यह आयोजन राजधानी के खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच देने के साथ-साथ आम लोगों में खेलों के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। आने वाले दिनों में प्रतियोगिता और अधिक रोमांचक होगी तथा विजेता टीमों के बीच खिताब के लिए कड़ा मुकाबला देखने को मिलेगा।

पूर्वोत्तर रेलवे ने यात्रियों को दी बड़ी सौगात, 28 जून से बदलेगी मैलानी–नानपारा पैसेंजर ट्रेनों की समय–सारिणी

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। पूर्वोत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल ने मैलानी-नानपारा मीटर गेज रेलखंड पर यात्रा करने वाले हजारों दैनिक यात्रियों और स्थानीय नागरिकों को बड़ी राहत देते हुए पैसेंजर ट्रेनों की समय-सारिणी में महत्वपूर्ण बदलाव किया है। मंडल रेल प्रबंधक गौरव अग्रवाल के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक प्रसन्न कात्यायन के निर्देशन में किया गया यह संशोधन 28 जून 2026 से प्रभावी होगा। रेलवे का कहना है कि इस बदलाव से ट्रेनों का संचालन अधिक संतुलित होगा, विभिन्न ट्रेनों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित होगा और यात्रियों को अधिक सुविधाजनक यात्रा का लाभ मिलेगा।रेलवे अधिकारियों के अनुसार लंबे समय से नियमित यात्रियों और स्थानीय लोगों की ओर से मैलानी-नानपारा खंड पर संचालित पैसेंजर ट्रेनों के समय में बदलाव की मांग की जा रही थी। विशेष रूप से विभिन्न ट्रेनों से मैलानी पहुंचने वाले यात्रियों को आगे की ट्रेन पकड़ने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नई समय-सारिणी तैयार की गई है।संशोधित समय के अनुसार ट्रेन संख्या 52262 मैलानी-नानपारा पैसेंजर अब सुबह 8:50 बजे के स्थान पर 10:50 बजे मैलानी से रवाना होगी। वहीं ट्रेन संख्या 52264 मैलानी-नानपारा पैसेंजर का प्रस्थान समय 7:35 बजे से बदलकर 7:05 बजे कर दिया गया है।रेलवे का कहना है कि पहले दोनों पैसेंजर ट्रेनों के प्रस्थान के बीच केवल एक घंटा 15 मिनट का अंतर था। नई व्यवस्था लागू होने के बाद यह अंतर बढ़कर तीन घंटे 45 मिनट हो जाएगा। इससे एक ही दिशा में चलने वाली ट्रेनों का संचालन अधिक व्यवस्थित होगा और यात्रियों को अपनी सुविधा के अनुसार यात्रा का बेहतर विकल्प मिलेगा।नई समय-सारिणी का सबसे अधिक लाभ पीलीभीत से ट्रेन संख्या 55357 द्वारा सुबह 9:40 बजे मैलानी पहुंचने वाले यात्रियों को मिलेगा। पहले इन यात्रियों को आगे की ट्रेन पकड़ने में परेशानी होती थी, लेकिन अब उन्हें 10:50 बजे रवाना होने वाली मैलानी-नानपारा पैसेंजर ट्रेन के लिए पर्याप्त समय मिलेगा।इसी प्रकार गोरखपुर, लखनऊ और सीतापुर से आने वाली ट्रेन संख्या 15009 सुबह 10:00 बजे मैलानी पहुंचती है। नई समय-सारिणी लागू होने के बाद इस ट्रेन से आने वाले यात्री भी आसानी से ट्रेन संख्या 52262 के माध्यम से नानपारा और बीच के स्टेशनों तक अपनी यात्रा जारी रख सकेंगे। इससे रेल संपर्क और अधिक सुगम होगा।रेलवे प्रशासन का मानना है कि समय-सारिणी में यह बदलाव केवल ट्रेनों के समय बदलने तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे पूरे मैलानी-नानपारा मीटर गेज खंड पर यात्रियों को बेहतर कनेक्टिविटी, कम प्रतीक्षा समय और अधिक सुविधाजनक यात्रा का लाभ मिलेगा।

व्यवस्था की चिता पर जलते सपने: आखिर कब रुकेगा मौत का कारोबार?

लखनऊ के अलीगंज स्थित एक कोचिंग सेंटर में लगी आग में 15 छात्रों की दर्दनाक मौत उस व्यवस्था के चेहरे से नकाब हटाने वाली त्रासदी है, जो वर्षों से भ्रष्टाचार, लापरवाही और प्रशासनिक उदासीनता के सहारे चल रही है। जिन बच्चों को उनके माता-पिता बेहतर भविष्य के सपने लेकर कोचिंग भेजते हैं, वे यदि धुएं से भरे कमरों, बंद दरवाजों और अवैध निर्माणों के बीच दम तोड़ दें तो उसे केवल हादसा कहना सच्चाई से मुंह मोड़ना होगा। यह उन परिस्थितियों में हुई मौत है, जिसे रोका जा सकता था, टाला जा सकता था और जिसकी जिम्मेदारी तय की जा सकती है। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि क्या यह वास्तव में हादसा था या फिर भ्रष्ट व्यवस्था द्वारा किया गया एक सुनियोजित प्रशासनिक हत्याकांड? घटना के विवरण किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को झकझोर देने के लिए पर्याप्त हैं। आग लगने के बाद छात्र जान बचाने के लिए इधर-उधर भागे। कुछ तीसरी मंजिल से नीचे कूद गए, कुछ बाथरूम में छिप गए, यह सोचकर कि शायद वहां धुएं से बच सकेंगे लेकिन दम घुटने से उनकी मौत हो गई। यह दृश्य किसी युद्ध या प्राकृतिक आपदा का नहीं बल्कि उस इमारत का दृश्य था, जिसे नियमों की अनदेखी कर व्यावसायिक लाभ कमाने के लिए तैयार किया गया था। जहां पर्याप्त सुरक्षा इंतजाम नहीं थे, जहां फायर सेफ्टी मानकों का पालन नहीं हुआ और जहां छात्रों की सुरक्षा से अधिक महत्व मुनाफे को दिया गया।

कुछ ही समय पहले दिल्ली के मालवीय नगर में भी भीषण आग ने 21 लोगों की जान ले ली थी। उससे पहले मुंडका, अनाज मंडी, करोल बाग, अलीपुर और उपहार सिनेमा जैसे अनेक अग्निकांड देश देख चुका है। हर बार जांच में लगभग एक जैसी बातें सामने आती हैं, अवैध निर्माण, बंद निकास मार्ग, फायर एनओसी का अभाव, क्षमता से अधिक लोगों की मौजूदगी, प्रशासनिक अनदेखी और भ्रष्टाचार। यदि हर बार कारण एक जैसे हैं तो फिर इन घटनाओं को दुर्घटना नहीं बल्कि व्यवस्था की विफलता का परिणाम माना जाना चाहिए। लखनऊ अग्निकांड की प्रारंभिक जांच ने कई गंभीर सवाल खड़े किए हैं। जिस इमारत में कोचिंग सेंटर चल रहा था, वहां स्वीकृत नक्शे के विपरीत निर्माण किया गया था। सेटबैक क्षेत्र तक को कवर कर लिया गया था। नीचे पेट शॉप और गेमिंग जोन संचालित हो रहे थे जबकि ऊपर कोचिंग सेंटर और लाइब्रेरी चल रही थी। एक ही इमारत में अलग-अलग व्यावसायिक गतिविधियों का ऐसा मिश्रण सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत खतरनाक माना जाता है। सबसे गंभीर तथ्य यह सामने आया कि जिस रास्ते से छात्रों को बाहर निकलना था, वह प्रभावी रूप से बंद था। ऐसे में आग लगने के बाद उनके पास बचने का कोई विकल्प नहीं बचा। यह केवल तकनीकी गलती नहीं बल्कि मानव जीवन के प्रति घोर उपेक्षा का उदाहरण है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि ऐसी इमारतें अस्तित्व में आती कैसे हैं? क्या नगर निगम, विकास प्राधिकरण, फायर विभाग, बिजली विभाग और स्थानीय प्रशासन को इसकी जानकारी नहीं होती? कोई भी अवैध निर्माण रातों-रात खड़ा नहीं हो जाता। उसकी नींव पड़ती है, दीवारें खड़ी होती हैं, मंजिलें बनती हैं, बिजली-पानी के कनेक्शन दिए जाते हैं और फिर वहां व्यावसायिक गतिविधियां शुरू हो जाती हैं। इस पूरी प्रक्रिया में अनेक विभाग शामिल होते हैं। सच्चाई यही है कि भ्रष्टाचार और मिलीभगत की जड़ें इतनी गहरी हैं कि नियम केवल फाइलों में रह जाते हैं जबकि जमीन पर अवैधता का साम्राज्य खड़ा हो जाता है। देश का शहरी विकास मॉडल भी इस समस्या के लिए कम जिम्मेदार नहीं है। आज अधिकांश शहरों में अधिक से अधिक लाभ कमाने की होड़ लगी हुई है। बिल्डर अतिरिक्त मंजिलें जोड़ देते हैं, सेटबैक क्षेत्र को कवर कर लेते हैं, बेसमेंट का उपयोग अवैध व्यावसायिक गतिविधियों के लिए करते हैं और आपातकालीन निकास को स्टोर रूम में बदल देते हैं। बदले में कुछ अधिकारियों की जेबें गर्म हो जाती हैं और फाइलों में सब कुछ वैध दिखाई देने लगता है। नतीजा यह होता है कि एक पूरी इमारत धीरे-धीरे मौत के जाल में बदल जाती है और किसी दिन एक चिंगारी सैंकड़ों परिवारों की खुशियां छीन लेती है। उपहार सिनेमा अग्निकांड को लगभग तीन दशक बीत चुके हैं। उस घटना में बंद निकास द्वारों के कारण 59 लोगों की मौत हुई थी। देश ने उस समय कड़े कानूनों और सख्त निगरानी की मांग की थी। लेकिन क्या वास्तव में कुछ बदला? यदि बदला होता तो मुंडका, अनाज मंडी, करोल बाग, मालवीय नगर और लखनऊ जैसी घटनाएं दोहराई नहीं जाती। हर बड़े हादसे के बाद जांच समितियां बनती हैं, मुआवजे घोषित होते हैं, कुछ अधिकारियों को निलंबित कर दिया जाता है और मीडिया में कुछ दिनों तक बहस चलती है। फिर मामला धीरे-धीरे ठंडा पड़ जाता है और व्यवस्था अगले हादसे का इंतजार करने लगती है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि आज भी देश के लगभग हर शहर में हजारों ऐसी इमारतें मौजूद हैं, जो किसी भी समय अग्निकांड का केंद्र बन सकती हैं। संकरी गलियों में बनी बहुमंजिला इमारतें, बिना वेंटिलेशन के कोचिंग सेंटर, अवैध रूप से संचालित फैक्ट्रियां, बेसमेंट में चल रहे व्यवसाय, बंद खिड़कियां और एकमात्र निकास मार्ग, ये सभी भविष्य की त्रासदियों के संकेत हैं।

महाराष्ट्र विधानसभा में शरिया कानून और बहुविवाह की वकालत करने वाली सना मलिक से कुछ सवाल

नीरज कुमार दुबे

हम आपको बता दें कि महाराष्ट्र विधानसभा में समान नागरिक संहिता, तीन तलाक और मुस्लिम महिलाओं की सुरक्षा को लेकर हुई चर्चा अचानक उस समय भड़क उठी जब सना मलिक ने खुलेआम कहा कि भारत में भी पाकिस्तान की तरह इस्लामिक कानून लागू होना चाहिए।

अगर भारत में रहकर किसी को पाकिस्तान का कानून, शरिया आधारित व्यवस्था या कुरान के नाम पर चलने वाला शासन इतना ही पसंद है, तो सबसे पहले उसे भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था का लाभ उठाना बंद कर देना चाहिए और उसी देश में जाकर बस जाना चाहिए जिसकी व्यवस्था की वह इतनी खुलकर वकालत कर रहा है। भारतीय संविधान की शपथ लेकर चुनाव जीतना, विधायक बनकर लोकतंत्र के मंदिर में पहुंचना और फिर उसी सदन में खड़े होकर पाकिस्तान जैसे देश के कानून की तारीफ करना केवल गैर जिम्मेदाराना नहीं, बल्कि देश की संवैधानिक आत्मा का अपमान है। शर्मनाक बात यह है कि यह बयान किसी कट्टरपंथी संगठन के मंच से नहीं, बल्कि महाराष्ट्र विधानसभा के भीतर भाजपा की सहयोगी पार्टी राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की विधायक सना मलिक ने दिया।

हम आपको बता दें कि महाराष्ट्र विधानसभा में समान नागरिक संहिता, तीन तलाक और मुस्लिम महिलाओं की सुरक्षा को लेकर हुई चर्चा अचानक उस समय भड़क उठी जब सना मलिक ने खुलेआम कहा कि भारत में भी पाकिस्तान की तरह इस्लामिक कानून लागू होना चाहिए। उन्होंने कुरान और मुस्लिम पर्सनल लॉ का हवाला देते हुए बहुविवाह और तीन तलाक का समर्थन किया। यह बयान उस समय आया जब सदन में मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों और उनके साथ हो रहे अत्याचारों पर गंभीर चर्चा चल रही थी।

पूरा मामला भाजपा विधायक देवयानी फरांदे द्वारा नियम 105 के तहत प्रस्तुत ध्यानाकर्षण नोटिस से शुरू हुआ। उन्होंने सदन में कहा कि केंद्र सरकार ने मुस्लिम महिलाओं को न्याय दिलाने के लिए तीन तलाक पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून बनाया, लेकिन महाराष्ट्र में उसका प्रभावी क्रियान्वयन नहीं हो रहा है। उन्होंने दावा किया कि मुस्लिम महिलाओं को आज भी बहुविवाह, घरेलू हिंसा और तलाक जैसी समस्याओं से गुजरना पड़ रहा है। देवयानी फरांदे ने बताया कि पिछले डेढ़ महीने में तीन मुस्लिम महिलाएं सहायता के लिए उनके पास पहुंचीं। किसी महिला को अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी दी गई, तो किसी के पति ने उस पर हमला करने की कोशिश की। उन्होंने सरकार से पूछा कि आखिर समान नागरिक संहिता कब लागू होगी और इसके लिए क्या विशेष कार्यबल बनाया जाएगा?

लेकिन मुस्लिम महिलाओं के दर्द और उनके अधिकारों की चर्चा के बीच सना मलिक ने जिस तरह पाकिस्तान और इस्लामिक कानून का समर्थन किया, उसने पूरे सदन का माहौल गरमा दिया। सना मलिक ने कहा कि पाकिस्तान ने कोई नया कानून नहीं बनाया, बल्कि कुरान में जो व्यवस्था दी गई है, उसका पालन किया है और भारत को भी पाकिस्तान की तरह कुरान के नियमों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि बहुविवाह केवल मुस्लिम समाज में नहीं, बल्कि हर धर्म में होता है। इतना ही नहीं, उन्होंने यह तक कह दिया कि मुसलमानों में बहुविवाह का तरीका सिखाया गया है और उसका पालन होना चाहिए, इसके लिए कानून बनाया जाना चाहिए।

देखा जाये तो यह बयान केवल राजनीतिक विवाद नहीं है, बल्कि यह उस मानसिकता को उजागर करता है जो भारत के संविधान से ऊपर मजहबी कानून को रखने की कोशिश करती है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर एक महिला विधायक होकर भी सना मलिक को उन हजारों, लाखों मुस्लिम महिलाओं का दर्द क्यों नहीं दिखाई देता जो बहुविवाह और तीन तलाक जैसी प्रथाओं की वजह से वर्षों तक प्रताड़ना झेलती रही हैं। देश में कई ऐसी घटनाएं सामने आती रही हैं जहां कई पत्नियां रखने वाले पुरुषों पर महिलाओं के शोषण, मारपीट और मानसिक उत्पीड़न के आरोप लगे। इसके बावजूद बहुविवाह को जायज ठहराना आखिर किस मानसिकता का परिचायक है?

उधर, सना मलिक के बयान पर प्रतिक्रियाएं भी आने लगी हैं। भाजपा विधायक अतुल भातखलकर ने सना मलिक के बयान पर कड़ा पलटवार करते हुए कहा कि चर्चा का विषय तीन तलाक कानून का क्रियान्वयन है, पाकिस्तान या मजहबी परंपराएं नहीं। उन्होंने साफ कहा कि यह देश संविधान से चलता है, कुरान से नहीं। यहां पाकिस्तान और धार्मिक कानूनों की वकालत करने की कोई आवश्यकता नहीं है। भाजपा और शिवसेना के विधायकों ने भी सना मलिक के बयान का जोरदार विरोध किया।

महाराष्ट्र सरकार की ओर से गृह राज्य मंत्री योगेश कदम ने कहा कि महायुति सरकार समान नागरिक संहिता लागू करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि इस विधेयक का मसौदा तैयार करने के लिए उच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में समिति बनाई जाएगी। उन्होंने उत्तराखंड का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां लागू समान नागरिक संहिता कानून में बहुविवाह पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाया गया है और उल्लंघन करने वालों के लिए सात वर्ष तक की सजा का प्रावधान है।

उल्लेखनीय है कि सना मलिक राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता नवाब मलिक की बेटी हैं। नवाब मलिक का नाम पहले भी गंभीर विवादों में आ चुका है। वर्ष 2022 में प्रवर्तन निदेशालय को उनके अंडरवर्ल्ड डॉन दाऊद इब्राहिम गिरोह से संबंधों के सबूत मिलने का दावा किया गया था।

बहरहाल, अब सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या महाराष्ट्र की राजनीति में बैठे बाकी दल केवल वोट बैंक की राजनीति के कारण इस बयान पर चुप हैं? क्या संविधान की शपथ लेने वाले जनप्रतिनिधियों को खुलेआम पाकिस्तान और इस्लामिक कानून की पैरवी करने की छूट मिलनी चाहिए? यह केवल राजनीतिक बहस नहीं, बल्कि भारत की संवैधानिक पहचान और लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ा हुआ सवाल है।

टिप्पणी

गहरी यांत्रणा से गुजरना

न्याय होने से पहले न्यूजक्लिक से जुड़े लोगों को गहरी यांत्रणा से गुजरना पड़ा। एक चलती हुई वेबसाइट मृतप्राय हो गई, दर्जनों कर्मचारियों की नौकरी गई, उनमें से बहुतों के यहां छापे पड़े। इनकी भरपाई कैसे होगी?

छह साल तक प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की यांत्रणा झेलने के बाद आखिरकार वेबसाइट न्यूजक्लिक को इंसाफ मिला। मुकदमा खारिज करते हुए दिल्ली हाई कोर्ट ने महत्त्वपूर्ण टिप्पणियां कीं। कहा कि न्यूजक्लिक के खिलाफ ना सिर्फ जारी कार्यवाही दुर्भावनापूर्ण है, बल्कि यह स्वतंत्र एवं निष्पक्ष पत्रकारिता पर मनमाना हमला तथा शक्ति के दुरुपयोग का मामला भी है। ईडी के आरोपों को 'पूर्णतः गढ़ा हुआ और निराधार ठहराते हुए न्यायालय ने कहा कि वेबसाइट के खिलाफ दूर से संकेत देने लायक भी कोई सबूत नहीं पेश नहीं किया गया। जबकि आरोप मनी लॉन्ड्रिंग निरोधक अधिनियम के तहत लगाया गया था।

बुधवार को ही हाईकोर्ट की एक दूसरी बेंच ने जम्मू-कश्मीर के मानवाधिकार कार्यकर्ता खुर्रम परवेज पर यूएपीए के तहत जारी मुकदमे में जमानत दे दी। यह मामला पांच साल पुराना हो चुका है, मगर हाई कोर्ट इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अभी इसमें मुकदमे की कार्यवाही शुरू होने की दूर-दूर तक संभावना नहीं है। इसलिए उच्च न्यायालय ने 'जेल अपवाद और बेल नियम का सिद्धांत लागू किया। ये दोनों मामले देश में कानून के राज और न्याय की भावना के रोजमर्रा के स्तर पर जारी उल्लंघन की मिसालें हैं। मुद्दा सिर्फ परवेज या उन जैसे लोगों को सताने का नहीं है। सवाल है कि उनके खिलाफ अभियोग पक्ष के पास अकाट्य साक्ष्य हैं, तो न्यायिक कार्यवाही में उन्हें सिद्ध कर कानून सज़ा दिलाने की तत्परता वह क्यों नहीं दिखाता? ऐसा नजरिया क्यों अपनाया गया है, जिससे प्रक्रिया को ही दंड बना देने का अस्वीकार्य चलन अस्तित्व में आया है?

यह न्यूजक्लिक की खुशकिस्मती है कि उस पर मुकदमा चला। बहरहाल, न्याय होने से पहले उसके संपादक एवं अन्य पदाधिकारियों को महीनों जेल में गुजारने पड़े, एक चलती हुई वेबसाइट मृतप्राय हो गई, दर्जनों कर्मचारियों की नौकरी गई, उनमें से बहुतों के घर पर छापे पड़े जिससे उनकी प्रतिष्ठा को भारी क्षति पहुंची। आखिर इन सबकी भरपाई कैसे होगी? अतः क्या अब वक्त नहीं आ गया है, जब निराधार आरोप गढ़ने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाए? साथ ही जिनकी जिंदगी अस्थिर और परेशान होती है, उन्हें उचित मुआवजा देने का प्रावधान किया जाए?

ब्लॉग

नई भाजपा के रोल माडल हैं योगी, हेमंत और शुभेंदु!

मोदी-शाह के नेतृत्व में सेकुलर संक्रमण से मुक्त हुई भारतीय राजनीति

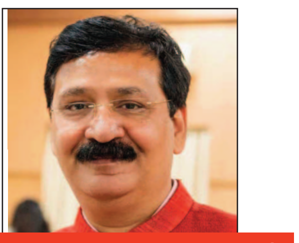

प्रो. (डा.) संजय द्विवेदी

उत्तर प्रदेश एक ऐसे मुख्यमंत्री से रूबरू है, जिसे राजनीति के मैदान में बहुत गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था। उनके बारे में यह ख्यात था कि वे एक खास वर्ग की राजनीति करते हैं और भारतीय जनता पार्टी भी उनकी राजनीतिक शैली से पूरी तरह सहमत नहीं है। लेकिन उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने जिस तरह अपनी पकड़ बनाई है और देश में एक अलग माडल खड़ा दिया है, वह सर्वत्र चर्चा का विषय है। इससे यह भी साबित हो रहा है कि 'अपनी राजनीति' के प्रति भाजपा का आत्मदैन्य कम हो रहा है। वहीं असम में हेमंत विश्वशर्मा उम्मीदों का चेहरा बनकर उभरे हैं, असम में तीसरी बार सरकार बनाकर भाजपा ने पूर्वोत्तर में इतिहास रच दिया है। इसी तरह गृहमंत्री अमित शाह की रणनीति से पश्चिम बंगाल की विजय ऐतिहासिक कही जा रही है और वहां बने मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के ताबड़तोड़ फैसलों ने जनविश्वास की हिलोरें पैदा की हैं। जड़ता को तोड़कर एक नई उम्मीद बनी है। केंद्रीय राजनीति में नरेंद्र मोदी और अमित शाह के आगमन ने भारतीय राजनीति के परिदृश्य को बदलकर रख दिया है।

वैचारिक हीनग्रंथि से बाहर आई भाजपा-

भाजपा का आज तक का ट्रैक हिंदुत्व का वैचारिक और राजनीतिक इस्तेमाल कर सत्ता में आने का रहा है। देश की राजनीति में चल रहे विमर्श में भाजपा बड़ी चतुराई से इस कार्ड का इस्तेमाल तो करती थी, किंतु उसके नेतृत्व में इसे लेकर एक हिचक बनी रहती थी। वो हिचक अटल जी से लेकर आडवानी तक हर दौर में दिखी है। भाजपा का हर नेता सत्ता पाने के बाद यह साबित करने में लगा रहता है वह अन्य दलों के नेताओं के कम 'सेकुलर' नहीं है। उत्तर प्रदेश की 'आदित्यनाथ परिघटना' दरअसल भाजपा की वैचारिक हीनग्रंथि से मुक्ति को स्थापित करती नजर आती है। नरेंद्र मोदी के राज्यारोहण के बाद योगी आदित्यनाथ का उदय भारतीय राजनीति में एक अलग किस्म की राजनीति की स्वीकृति का प्रतीक है। एक धर्मप्राण देश में धार्मिक प्रतीकों, भगवा रंग, सन्यासियों के प्रति जैसी विरक्ति मुख्यधारा की राजनीति में दिखती थी, वह अन्यत्र दुर्लभ है। भाजपा जैसे दल भी इस सेकुलर विकार से कम ग्रस्त न थे। धर्म और धर्माचार्यों का इस्तेमाल, धार्मिक आस्था का दोहन और सत्ता पाते ही सभी धार्मिक प्रतीकों से मुक्ति लेकर सारी राजनीति सिर्फ तुष्टीकरण में लग जाती थी। प्रधानमंत्रियों समेत जाने कितने सत्ताधीशों के ताज जामा मस्जिद में झुके होगें, लेकिन हिंदुत्व के प्रति उनकी हिचक निरंतर थी।

यह भी कम आश्चर्यजनक नहीं की एक समय में दीनदयाल जी उदार थे, तो अटलजी और बलराज मधोक अपनी वक्रता के चलते उग्र नेता माने जाते थे। अटलजी का दौर आया तो लालकृष्ण आडवाणी उग्र कहे जाने लगे, फिर एक समय ऐसा भी आया जब आडवानी उदार हो गए और नरेंद्र मोदी उग्र मान जाने लगे। आज की व्याख्याएं सुनें- नरेंद्र मोदी उदार हो गए हैं और योगी आदित्यनाथ और गृहमंत्री अमित शाह उग्र माने जाने लगे हैं। अब तो असम के मुख्यमंत्री हेमंत विश्वशर्मा और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी भी आदित्यनाथ की परंपरा के मुख्यमंत्री कहे जाने लगे हैं।

सेकुलर संक्रमण से मुक्ति से मिली नई पहचान-

यह मीडिया, बौद्धिकों की अपनी रोज बनाई जाती व्याख्याएं हैं। लेकिन सच यह है कि अटल, मधोक, आडवानी, मोदी, अमित शाह या आदित्यनाथ, हेमंत विश्वशर्मा और शुभेंदु अधिकारी कोई अलग-अलग लोग नहीं है। एक विचार के प्रति समर्पित राष्ट्रनायकों की सूची है यह। इसमें कोई कम जा ज्यादा उदार या कठोर नहीं है। किंतु भारतीय राजनीति का विमर्श ऐसा है जिसमें वास्तविकता से अधिक ड्रामे पर भरोसा है। भारतीय राजनेता की मजबूरी है कि वह टोपी पहने, रोजा भले न रखे किंतु इफ्तार की दावतें दे। आप ध्यान दें सरकारी स्तर पर यह प्रहसन लंबे समय से जारी रहा है। भाजपा भी इसी राजनीतिक क्षेत्र में काम करती है। उसमें भी इस तरह के रोग हैं। वह भी राष्ट्रनीति के साथ थोड़े तुष्टिकरण को गलत नहीं मानती। जबकि उसका अपना नारा रहा है सबको न्याय, तुष्टिकरण किसी का नहीं। उसका एक नारा यह भी रहा है-"राम, रोटी और इंसाफ।"

लंबे समय के बाद भाजपा में अपनी वैचारिक लाइन को लेकर गर्व का बोध दिख रहा है। असरे बाद वे भारतीय राजनीति के सेकुलर संक्रमण से मुक्त होकर अपनी वैचारिक भूमि पर गरिमा के साथ खड़े दिख रहे हैं। समझौतों और आत्मसमर्पण की मुद्राओं के बजाए उनमें अपनी वैचारिक भूमि के प्रति हीनताग्रंथि के भाव कम हुए हैं। अब वे अन्य दलों की नकल के बजाए एक वैचारिक लाइन लेते हुए दिख रहे हैं। दिखावटी सेकुलरिज्म के बजाए वास्तविक राष्ट्रीयता के उनमें दर्शन हो रहे हैं। मोदी जब एक सौ चालीस करोड़ हिंदुस्तानियों की बात करते हैं तो बात अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक से ऊपर चली जाती है। यहां देश सम्मानित होता है, एक नई राजनीति का प्रारंभ दिखता है। एक भगवाधारी सन्यासी जब मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठता है तो वह एक नया संदेश देता है। वह संदेश त्याग का है, परिवारवाद के विरोध का है, तुष्टिकरण के विरोध का है, सबको न्याय का है।

भारतीयता का विमर्श अब केंद्रीय विमर्श-

आजादी के बाद के सत्तर सालों में देश की राजनीति का विमर्श भारतीयता और उसकी जड़ों की तरफ लौटने के बजाए घोर पश्चिमी और वामपंथी रह गया था। जबकि बेहतर होता कि आजादी के बाद हम अपनी ज्ञान परंपरा की और लौटते और अपनी जड़ों को मजबूत बनाते। किंतु सत्ता,शिक्षा, समाज और राजनीति में हमने पश्चिमी तो, कहीं वामपंथी विचारों के आधार पर चीजें खड़ी कीं। इसके कारण हमारा अपने समाज से ही रिश्ता कटता चला गया। सत्ता और जनता की दूरी और बढ़ गयी। सत्ता दाता बन बैठी और जनता याचक। सेवक मालिक बन गए। ऐसे में लोकतंत्र एक छद्म लोकतंत्र बन गया। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हम सत्तर साल के बाद सड़कें बना रहे हैं। यह लोकतंत्र की विफलता ही है कि हमारे अपने नौजवानों ने भारतीय राज्य के खिलाफ बंदूकें उठा रखी थीं। गृहमंत्री अमित शाह के दृढ़संकल्प की बदौलत आज माओवादी आतंक का अंत भी हमने देखा। पिछले सत्तर सालों में लोकतंत्र की विफलता की ये कहानियां सर्वत्र बिखरी पड़ी हैं। राजनीतिक तंत्र के प्रति उठा भरोसा भी साधारण नहीं था। आज ऐसा लगता है कि राजनीति से कुछ हो सकता है। मोदी,शाह, आदित्यनाथ भरोसे के प्रतीक बन गए। इसका मतलब यह भी है कि ये कुछ कह रहे हैं तो करेंगें भी।

नरेंद्र मोदी, अमित शाह, आदित्यनाथ देश की इन्हीं उम्मीदों के चेहरे हैं। तीनों अंग्रेजी नहीं बोलते। तीनों जन-मन-गण के प्रतिनिधि हैं। यह भारतीय राजनीति का बदलता हुआ चेहरा है। क्या सच में भारत खुद को पहचान रहा है ? वह जातियों, पंथों, क्षेत्रों की पहचान से अलग एक बड़ी पहचान से जुड़ रहा है- वह पहचान है भारतीय होना, राष्ट्रीय होना। एक समय में राजनीति हमें नाउम्मीद करती हुयी नजर आती थी। बदले समय में वह उम्मीद जगा रही है। कुछ चेहरे ऐसे हैं जो भरोसा जगाते हैं। एक आकांक्षावान भारत बनता हुआ दिखता है। यह आकांक्षाएं राजनीति दलों के एजेंडे से जुड़ पाएं तो देश जल्दी और बेहतर बनेगा। राजनीतिक विमर्श और जनविमर्श को साथ लाने की कवायद हमें करनी ही होगी। जल्दी बहुत जल्दी। यह जितना और जितना जल्दी होगा भारत अपने भाग्य पर इठलाता दिखेगा।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक और वरिष्ठ पत्रकार हैं।)

एटा में मोहर्रम जुलूस के दौरान बड़ा हादसा, हाईटेंशन लाइन से टकराया ताजिया, 1 युवक की मौत, 7 झुलसे

आर्यावर्त क्रांति

एटा। यूपी के एटा जिले के अलीगंज कस्बे में मोहर्रम के जुलूस के दौरान गुरुवार को बड़ा हादसा हो गया। पुरानी तहसील चौराहे के पास गश्त का ताजिया हाईटेंशन बिजली लाइन की चपेट में आ गया, जिससे उसमें करंट दौड़ गया। हादसे में 19 वर्षीय एक युवक की दर्दनाक मौत हो गई, जबकि सात अन्य लोग गंभीर रूप से झुलस गए। घायलों में एक की हालत गंभीर होने पर उसे इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। वहीं घटना के बाद लोगों का आक्रोश देखते हुए मौके पर भारी पुलिस की तैनाती की गई है।

देर रात मोहर्रम का जुलूस पुरानी तहसील क्षेत्र से गुजर रहा था। इसी दौरान ताजिया अचानक एक ओर झुक गया और ऊपर से गुजर रही हाईटेंशन बिजली लाइन से संपर्क में आ गया। बिजली आपूर्ति चालू होने के कारण ताजिया उठा रहे लोगों को तेज करंट लग गया। घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई और जुलूस में शामिल लोग इधर-उधर भागने लगे।

एक की मौत, 7 घायल

पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से सभी घायलों को तत्काल अलीगंज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। वहां डॉक्टरों ने मेवातियान मोहल्ला निवासी 19 वर्षीय सैफ पुत्र शाकिर को मृत घोषित कर दिया। घायलों में साहिल (18), अली हसन (18), आमिर (22), खुर्शीद (30), असरफ (15) और नसीम (30) सहित सात लोग शामिल हैं।

लोगों ने लगाए ये आरोप

घटना की सूचना मिलते ही अस्पताल में बड़ी संख्या में लोग पहुंच गए और बिजली विभाग व प्रशासन के खिलाफ आक्रोश व्यक्त किया। लोगों ने आरोप लगाया कि जुलूस के दौरान सुरक्षा व्यवस्था के लिए बिजली विभाग के अधिकारी मौके पर मौजूद नहीं थे और हाईटेंशन लाइन की सुरक्षा को लेकर आवश्यक कदम नहीं उठाए गए।

मौके पर भारी पुलिस बल तैनात

स्थिति को नियंत्रित करने के लिए भारी पुलिस बल मौके पर तैनात किया गया। युवा बसपा नेता जुनैद मियां ने भी घटनास्थल और अस्पताल पहुंचकर लोगों को शांत कराया। बाद में अपर पुलिस अधीक्षक श्वेताभ पांडे ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और मामले की जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का आश्वासन दिया।

आगरा–लखनऊ एक्सप्रेसवे पर डबल डेकर बस ट्रेलर में घुसी, 2 की मौत, 24 से ज्यादा घायल

आर्यावर्त क्रांति

आगरा। आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे में दो लोगों की जान चली गई, जबकि दो दर्जन से अधिक यात्री घायल हो गए। गोरखपुर से चंडीगढ़ जा रही एक डबल डेकर स्लीपर बस फिरोजाबाद जिले के नगला खंगर थाना क्षेत्र में आगे चल रहे ट्रेलर से जा भिड़ी।

शुरुआती जांच में हादसे की वजह चालक को आई नींद की झपकी मानी जा रही है। हादसे के बाद पुलिस, यूपीडा और एंबुलेंस टीमों ने मौके पर पहुंचकर राहत एवं बचाव अभियान चलाया।

शुक्रवार सुबह आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब गोरखपुर से चंडीगढ़ जा रही यात्रियों से भरी डबल डेकर स्लीपर बस खंभा संख्या 63 के पास आगे चल रहे ट्रेलर ट्रक से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस का अगला हिस्सा पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और बस के अंदर बैठे यात्रियों में चीख-पुकार मच गई।

हादसे की सूचना मिलते ही नगला खंगर थाना पुलिस, यूपीडा की रेस्क्यू टीम और 108 एंबुलेंस मौके पर पहुंचीं। स्थानीय टीमों ने बस में फंसे यात्रियों को बाहर निकालकर तत्काल अस्पताल पहुंचाना शुरू किया। बस में 60 से अधिक यात्री सवार बताए जा रहे हैं। हादसे में दो यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि करीब दो दर्जन लोग घायल हो गए। सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए शिकोहाबाद के संयुक्त जिला चिकित्सालय भेजा गया। इनमें से पांच यात्रियों की हालत गंभीर होने पर चिकित्सकों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए सैफई मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया।

प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि लंबी दूरी की यात्रा के दौरान बस चालक को संभवतः नींद की झपकी आ गई, जिसके कारण बस अनियंत्रित होकर ट्रेलर से जा टकराई। हालांकि, पुलिस हादसे के सभी पहलुओं की जांच कर रही है और दुर्घटना के वास्तविक कारणों का पता लगाने में जुटी है।

बच्चे हैं समाज की नींव के पत्थर : जीएस तिवारी

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। बच्चों को बचपन से ही बाल संगत से जोडना आवश्यक है। बाल संगत में आने से बच्चों का सार्वभौमिक व आध्यात्मिक विकास होता है तथा वे प्यार, नम्रता व सहनशीलता जैसे दैवीय गुण ग्रहण करते हैं। यही गुण उनके अपने कैरियर और मिशन में आगे बढने का मार्ग प्रशस्त करता है। बच्चे मन के सच्चे होते हैं, उनमें बैर, इर्ष्या, द्वेष आदि बुराइयां नहीं होती। आज के बच्चे आने वाले अच्छे समाज की नींव के पत्थर हैं जो आगे चलकर सुदृढ तथा उंच- नीच की भावना से उठकर स्वच्छ समाज का निर्माण करने में सक्षम होंगे। आप चाहे तो उन्हें प्यार, मिल वर्तन, भाईचारा आदि अच्छी भावनाएं सीखाकर एक अच्छा नागरिक और इंसान बना सकते हैं। संस्कारवान बच्चे ही देश व समाज का भविष्य उज्जवल बनाते हैं। उक्त उद्गार मडियाहूं पडाव स्थित संत निरंकारी सत्संग भवन के प्रांगण में जोन स्तरीय

निरंकारी बाल समागम के अवसर पर संबोधित करते हुए लखनऊ से आए जी, एस, तिवारी केंद्रीय ज्ञान प्रचारक ने व्यक्त किया । उन्होंने कहा कि जब बच्चे सत्संग में आते हैं तो रहने का तरीका बदल जाता है। आज संत निरंकारी मिशन बच्चों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक गुणों के साथ-साथ आध्यात्मिक चेतना के विकास पर भी निरंतर बल देता आ रहा है। मिशन के अंतर्गत बच्चों को शुरू से ही बाल संगतो के माध्यम से उनके अंदर व्याप्त गुणों को उजागर किया जाता है जिससे वे होनहार बालक बन सके। देशभर में निरंकारी यूथ एवं बाल समागम का आयोजन किया जा रहा है। बच्चे हमारे देश के भविष्य होते हैं और समाज की रीढ होते है। अगर इन बच्चों को सही मार्गदर्शन और सही संस्कार देना आज से ही शुरू कर दिया जाए तो यह बच्चे ही देश को नई ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं और समाज का स्वरूप सुंदर और सकारात्मक बना सकते हैं। बच्चों और युवाओं ने गीत ,भजन, कविताएं, और लघु नाटक के साथ प्रेरक विचार व्यक्त कर निरंकार प्रभु और सत्संग से जुड़े रहने की सीख दी।

'तकिए से मुंह दबाकर मम्मी ने पापा को मार डाला...' 5 साल के बच्चे ने बताई कहानी, अवैध संबंधों के विरोध पर पत्नी बनी हैवान

आर्यावर्त संवाददाता

बिजनौर। उत्तर प्रदेश में बिजनौर के हीमपुर दीपा थाना क्षेत्र के नाईपुरा गांव में एक सनसनीखेज मामला सामने आया है, जहां अवैध संबंधों के विरोध पर एक पत्नी ने कथित तौर पर अपने ही पति की तकिए से मुंह दबाकर हत्या कर दी। इस खौफनाक वारदात का पर्दाफाश किसी और ने नहीं, बल्कि दंपती के 5 वर्षीय मासूम बेटे ने पुलिस के सामने किया। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आरोपी पत्नी को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है।

पुलिस और स्थानीय सूत्रों के अनुसार, नाईपुरा उर्फ जूझारपुरा गांव निवासी 26 वर्षीय कुंवरसेन खेती-बाड़ी और मजदूरी करता था। कुंवरसेन को अपनी पत्नी कमेंद्री के चरित्र पर शक था। ग्रामीणों के अनुसार, महिला का अपने ही भांजे गौतम के साथ कथित प्रेम प्रसंग चल

रहा था। इसी बात को लेकर पति-पत्नी के बीच अक्सर घरेलू कलह और मारपीट होती रहती थी। घटना वाले दिन सुबह भी दोनों के बीच जमकर झगड़ा हुआ था।

नींद में वारदात को दिया अंजाम

आरोप है कि बुधवार रात करीब 9 बजे कुंवरसेन जब घर लौटा, तो फिर से विवाद हुआ। इसके बाद वह चारपाई पर सो गया। रात में गहरी नींद में सोते समय कमेंद्री ने पहले उसके सिर और पैरों पर लोहे की रॉड से हमला कर उसे अधमरा कर दिया और फिर तकिए से उसका मुंह दबाकर उसकी हत्या कर दी। हत्या के बाद आरोपी महिला ने खुद ही शोर मचाकर ग्रामीणों और परिजनों को गुमराह करने की कोशिश की कि कुंवरसेन की अचानक तबीयत बिगड़ने से मौत हो गई है। मौके पर पहुंची पुलिस के सामने भी वह बार-बार बेहोश होने का नाटक करती रही।

5 साल के मासूम ने खोला मां का राज

इस अंधे कत्ल की गुत्थी तब सुलझी, जब पुलिस टीम घटनास्थल पर जांच कर रही थी। उसी समय मृतक के 5 वर्षीय बेटे हिमांशु ने हिम्मत दिखाते हुए पुलिस और परिजनों के सामने रोते हुए सच बता दिया। मासूम ने कहा, "मम्मी ने ही पापा को मारा है, उन्होंने पापा के मुंह पर तकिया रखा था।" बच्चे के इस बयान के बाद पुलिस ने जब शव का बारीकी से निरीक्षण किया, तो कुंवरसेन के सिर और पैरों पर चोट के गंभीर निशान पाए गए। इसके बाद पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपी पत्नी कमेंद्री को हिरासत में ले लिया।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार

चांदपुर के पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) देश दीपक सिंह ने बताया कि युवक का शव उसके घर से बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया है। मृतक के परिजनों की तहरीर के आधार पर मामले की जांच की जा रही है। अधिकारी ने स्पष्ट किया कि बच्चे के बयान को भी जांच का हिस्सा बनाया गया है, लेकिन मौत के सटीक कारणों की पुष्टि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फोरेंसिक साक्ष्यों के आने के बाद ही होगी। फिलहाल पुलिस प्रेम प्रसंग, पारिवारिक विवाद और अन्य सभी संभावित पहलुओं पर गहनता से जांच कर रही है।

'जख्मी देख पिघलकर लौट आएगी वो...' पति ने खुद को मारी गोली, फिर भी नहीं आई रूठी पत्नी, पहुंचा जेल

आर्यावर्त संवाददाता

अमरोहा। प्रदेश के अमरोहा जिले से एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक पति ने पत्नी की सहानुभूति पाने और उसे वापस बुलाने के लिए ऐसा कदम उठा लिया, जिसकी वजह से उसे खुद जेल जाना पड़ा। पत्नी से विवाद के बाद मायके जाने पर पति ने अपने ही हाथ में गोली मार ली और झूठी कहानी बना दी कि अज्ञात लोगों ने उसे जान से मारने की नीयत से गोली मारी है। हालांकि पुलिस जांच में पूरी सच्चाई सामने आ गई।

मामला अमरोहा जिले के हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव माछरा भगवानपुर का है। गांव निवासी मनोज और उसकी पत्नी के बीच पिछले कुछ दिनों से किसी बात को लेकर विवाद चल रहा था। विवाद बढ़ने के बाद पत्नी नाराज होकर अपने मायके दिल्ली चली गई। मनोज ने पत्नी को मनाने और वापस लाने की काफी कोशिश की, लेकिन वह वापस नहीं लौटी।

खुद अपने हाथ में गोली मार ली

इसके बाद मनोज ने पत्नी की सहानुभूति हासिल करने के लिए एक खतरनाक योजना बनाई। आरोप है कि उसने तमंचे से खुद अपने हाथ में गोली मार ली। गोली लगने के बाद उसने परिजनों और ग्रामीणों को बताया कि कुछ अज्ञात लोगों ने उसे जान से मारने की कोशिश की और उसे गोली मार दी। मनोज के मुताबिक, उसे ऐसा लगा था कि उसे जख्मी देख पत्नी का दिल पिघल जाएगा और वह मायके से आ जाएगी। घटना की जानकारी मिलते ही गांव में हड़कंप मच गया। लोगों ने मामले की सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी। शुरुआती तौर पर मनोज के बड़े भाई तेजपाल की तहरीर पर पुलिस ने अज्ञात हमलावरों के खिलाफ मुकदमा भी दर्ज कर लिया।

पूछताछ में मनोज ने पुलिस को बताई कहानी

जांच आगे बढ़ने के बाद पुलिस को घटना संदिग्ध लगी। पुलिस ने जब मामले की गहराई से पड़ताल की तो कई बातें सामने आईं। पूछताछ में मनोज ने पत्नी से विवाद और उसे वापस बुलाने की कोशिश की बात कबूल कर ली। पुलिस के अनुसार, मनोज ने स्वीकार किया कि उसने पत्नी की सहानुभूति पाने के लिए खुद को गोली मारी थी और झूठी कहानी बनाई थी। पुलिस ने बताया कि इस तरह की झूठी सूचना देकर माहौल खराब करने और अफवाह फैलाने के मामले में मनोज के खिलाफ कार्रवाई की गई। इसके बाद उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

सबसे हैरान करने वाली बात यह रही कि जिस पत्नी को वापस बुलाने और उसकी सहानुभूति पाने के लिए मनोज ने यह पूरा नाटक किया, वह फिर भी मायके से वापस नहीं आई। अब मनोज को अपनी गलती की कीमत जेल जाकर चुकानी पड़ रही है। पुलिस मामले में आगे की कार्रवाई कर रही है।

सूर्यभान का 'मॉडल आम बाग बना उदाहरण

जौनपुर। विकास खण्ड सिकरारा अंतर्गत ग्राम विशुनपुर (लाला बाजार) निवासी प्रगतिशील कृषक सूर्यभान यादव ने अपनी मेहनत और उद्यान विभाग के तकनीकी मार्गदर्शन से ऐसा ही उदाहरण प्रस्तुत किया है। आज उनका आम का बाग जनपद ही नहीं, बल्कि पूरे क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणा का केंद्र बन चुका है। सूर्यभान यादव वर्षों से कृषि एवं बागवानी कार्यों से जुडे रहे हैं। उनके पास पहले से आम का पारंपरिक बाग था, लेकिन उन्होंने इसे आधुनिक तकनीकों और दुर्लभ प्रजातियों के समावेश से एक नई पहचान देने का संकल्प लिया। उनके पुत्र अनिल यादव की बागवानी के प्रति विशेष रुचि ने इस प्रयास को और गति प्रदान की। आम प्रजातियों के बारे में जानकारी जुटाकर उन्होंने अपने एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के बाग में विभिन्न किस्मों का संग्रह एवं संरक्षण प्रारम्भ किया। सफलतापूर्वक विकसित हो रही हैं। यह बाग विविधता संरक्षण और आधुनिक बागवानी का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है।

'न मैंने रेप किया, न विक्की हूं...' एक निर्दोष अमीन पुलिस की लापरवाही से 5 साल तक जेल में रहा, अब हुआ बरी

आर्यावर्त संवाददाता

कानपुर। उत्तर प्रदेश के कानपुर से एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां पुलिस की लापरवाही से एक निर्दोष युवक को रेप और पॉक्सो एक्ट जैसे गंभीर मामले में करीब 5 साल तक जेल में रहना पड़ा। आरोप है कि पुलिस ने सही पहचान और जांच के बिना एक आरोपी की जगह दूसरे युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आखिरकार कोर्ट में पेश किए गए सबूतों के आधार पर युवक को निर्दोष मानते हुए बरी कर दिया गया।

मामला कानपुर के बिधनू थाना क्षेत्र से जुड़ा है। यहां वर्ष 2021 में रेप की एक घटना सामने आई थी। पुलिस ने मामले में आरोपी की तलाश शुरू की और जांच के दौरान विक्की नाम के युवक को आरोपी बताया। लेकिन आरोप है कि पुलिस ने बिना पहचान परेड और बिना सही तस्दीक किए अमीन लायल को गिरफ्तार कर लिया और उसे विक्की बताकर जेल भेज दिया।

'वह विक्की नहीं है...'

अमीन का आरोप है कि पुलिस ने उसे जबरन आरोपी बनाया। उसने पुलिस को बताया कि वह विक्की नहीं, बल्कि अमीन लायल है, लेकिन उसकी बात नहीं सुनी गई। अमीन के मुताबिक, उसे दो दिन तक थाने में रखा गया और उसके साथ मारपीट व मानसिक उत्पीड़न किया गया। इसके बाद उससे जबरन अपराध कबूल कराया गया और जेल भेज दिया गया। करीब 5 साल तक कानूनी लड़ाई लड़ने के बाद आखिरकार अमीन को न्याय मिला। विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट पवन कुमार राय ने मामले की सुनवाई के बाद तमाम सबूतों के आधार पर अमीन को बरी कर दिया।

अमीन ने कोर्ट में अपनी पीड़ा बताते हुए कहा कि उसे यह साबित करने में 5 साल लग गए कि वह विक्की नहीं है। उसने कहा कि इस दौरान उसकी जिंदगी के महत्वपूर्ण साल बर्बाद हो गए। उसके परिवार ने लगातार उसकी बेगुनाही साबित करने के लिए संघर्ष किया।

दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई होनी चाहिए

अमीन के पिता अनिल ने बताया कि उन्होंने पुलिस को कई सबूत दिए थे, जिनसे साबित होता था कि उनका बेटा निर्दोष है, लेकिन उनकी बात नहीं सुनी गई। उन्होंने कहा कि पुलिस की गलती की वजह से उनके बेटे की जिंदगी के 5 साल खराब हो गए। अब उनकी मांग है कि दोषी पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई होनी चाहिए। मामले की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने विवेचना में गंभीर लापरवाही मानते हुए तत्कालीन बिधनू थाना प्रभारी विनोद कुमार सिंह और जांच अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दिए हैं। कोर्ट ने कानपुर जिलाधिकारी और पुलिस कमिश्नर को पूरे मामले की जांच कर दोषी अधिकारियों पर कार्रवाई करने के लिए आदेशित किया है। अमीन के अधिवक्ता मोहम्मद सलीम ने कहा कि पुलिस की लापरवाही के कारण एक निर्दोष युवक को इतने लंबे समय तक जेल में रहना पड़ा। उन्होंने कहा कि मामले में जिम्मेदार पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई जरूरी है, ताकि भविष्य में किसी निर्दोष के साथ ऐसा अन्याय न हो। फिलहाल कोर्ट से राहत मिलने के बाद अमीन और उसका परिवार न्याय मिलने से संतुष्ट है, लेकिन उनका कहना है कि जो समय जेल में बीता उसकी भरपाई कभी नहीं हो सकती।

तजिये किये गये कर्बलाओं में सुपुर्द ए खाक

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। जनपद में शनिवार को गमगीन माहौल में यौमे आशूरा मनाया गया। इ आंसूओं का नजराने पेश कर ताजियों को अपनी-अपनी कर्बलाओं में सुपुर्द ए खाक कर दिया। इसके बाद अजाखानों में मजलिसें शामे गरीबां आयोजित हुई। नगर के विभिन्न इलाकों में निर्धारित समय के अनुसार ताजिए उठाये गये। जिसके साथ मातमी अंजुमनों ने नौहा और मातम किया। नगर क्षेत्र के अधिकांश ताजिये सदर इमामबारगाह स्थित गंजे शहीदा में सुपुर्द ए खाक किये गये जबकि कुछ ताजिए मोहल्लों की कर्बलाओं में भी सुपुर्द ए खाक हुए। चहारसू चैराहे से उठा जुलूस शिया जामा मस्जिद होता हुआ अपने मुख्य मार्गों से गुजरकर सदर इमामबारगाह पहुंचा। इसी प्रकार इमामबाड़ा शाह अबुल हसन भंडारी, मीर सैयद अली बलुआघाट, कटघरा, मोहल्ला रिजवीं खां, पुरानी बाजार, ताड़तला, बारादुअरिया, यहियापुर, पानदरीबा के ताजिए भी सदर इमामबारगाह स्थित गंजे शहीदा में दफ्न हुए। सिपाह मोहल्ले के ताजिये नबी साहब स्थित गंजे शहीदा में दफ्न किये गये। इसके पूर्व बलुआघाट स्थित शाही किला मस्जिद, मोहल्ला दीवान कबीर, ताड़तला की मस्जिद समेत अन्य स्थानों पर नमाजे आशूरा का आयोजन हुआ। देर शाम सदर इमामबारगाह की ईदगाह मैदान में मजलिसें शामे गरीबां हुई जिसमे शायरों ने अपने अंदाज में कर्बला के शहीदों को नजराने अकीदत पेश किया। मौलाना सै.जोहैरकैन अब्बास नकवी सहारनपुर ने मजलिस को खेताब करते हुए कर्बला में शामे गरीबा का जिक्र करते हुए बताया कि किस तरह हजरत इमाम हुसैन को उनके 71 साथियों के साथ तीन दिन का भूखा प्यासा शहीद कर दिया। यजीदी फौजो ने परिवार की महिलाओं बच्चों पर जो जुल्म ढाया उसे कोई नही भुला सकता है।

यूजीसी नेट में आया अनोखा सवाल : वंदेमातरम का सीक्वेंस लगाओ, तीन फिल्मों का रिलीज क्रम बताओ

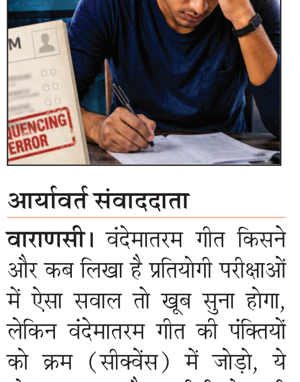

आर्यावर्त संवाददाता

वाराणसी। वंदेमातरम गीत किसने और कब लिखा है प्रतियोगी परीक्षाओं में ऐसा सवाल तो खूब सुना होगा, लेकिन वंदेमातरम गीत की पंक्तियों को क्रम (सीक्वेंस) में जोड़ो, ये थोड़ा अलग है। यूजीसी नेट की ऑनलाइन परीक्षा में ये सवाल पूछा गया है। मास कम्युनिकेशन के पेपर में जब सवाल आया तो अभ्यर्थी तुरंत दबे स्वर और मन में वंदेमातरम का गान कर सीक्वेंसिंग में जुट गए। फिर भी कई परीक्षार्थी उलझे रहे क्योंकि ये सवाल वंदेमातरम के पूरे 23 लाइन के गीत से पूछा गया था। बंकिम चंद्र ने 1875 में वंदे मातरम् लिखा था जो कि 1882 में 'आनंदमठ उपन्यास में आया।

प्रश्न के विकल्प में जो वंदे मातरम् दिया गया था उसका क्रम ऐसा था

वंदे मातरम सुजलाम, सुफलाम,
मलयज शीतलाम
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्
कोटि-कोटि-कंठ-कल-कल-निनाद-कराले
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि,
तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः

ये है सही क्रम

वंदे मातरम, सुजलाम, सुफलाम, मलयज शीतलाम।
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम।
कोटि-कोटि-कंठ-कल-कल-निनाद-कराले।
तुमि विद्या, तुमि धर्म तुमि हृदि,
तुमि मर्म त्वं हि प्राणाः।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरणधारिणी।

एक हीरो की 3 फिल्मों का रिलीज क्रम पूछा

चितचोर, रजनीगंधा, छोटी सी बात फिल्म के रिलीज होने क्रम पूछा गया। खास बात ये है कि इन तीनों ही फिल्मों में एक हीरो आमोल पालेकर थे। ये फिल्में दो साल के ही अंतराल पर आईं थीं।

फिल्मों के रिलीज का सही क्रम

फिल्म	रिलीज
रजनीगंधा	13 सितंबर 1974
छोटी सी बात	9 जनवरी 1976
चितचोर	30 जनवरी 1976

द्वितीय विश्व युद्ध में किस पत्रकार को फांसी हुई

कई सवाल तो अमेरिका और ईरान व इराक की पत्रकारिता से पूछा गया था। अमेरिकन पब्लिक रिलेशन सोसाइटी के अध्यक्ष का नाम पूछा गया। दूसरे विश्व युद्ध में स्टिंग करने पर किस पत्रकार को फांसी की सजा हुई थी। इसके अलावा पुरानी अंग्रेजी पत्रिकाओं के भी आने का काल पूछा गया था। पेपर एक और दो दोनों में ये सवाल पूछे गए थे। कम्युनिकेशन रिसर्च से सबसे कठिन सवाल पूछा गया कि टी टेस्ट और एनोवा टेस्ट क्या है। पेपर वन शिक्षण अधिगम में लघुगणक के सवाल पूछे गए थे। वहीं इस बार का ऑस्कर अवार्ड पूछा गया था।

क्या खराब लाइफस्टाइल पुरुषों के टेस्टोस्टेरोन को कर सकता है प्रभावित?

आज के समय में खराब लाइफस्टाइल कई लोगों की दिनचर्या का हिस्सा बन गई है। ऐसे में कई पुरुषों के मन में सवाल उठता है कि क्या इसका असर टेस्टोस्टेरोन के स्तर पर पड़ सकता है। आइए इस बारे में डिटेल में जानते हैं।

आज के समय में खराब लाइफस्टाइल, गलत खानपान, तनाव और शारीरिक एक्टिविटी की कमी जैसी आदतों को कई स्वास्थ्य समस्याओं से जोड़कर देखा जाता है। ऐसे में पुरुषों के बीच यह सवाल भी उठता है कि क्या इन आदतों का असर टेस्टोस्टेरोन पर भी पड़ सकता है। टेस्टोस्टेरोन पुरुषों में पाया जाने वाला एक अहम हॉर्मोन है। यह मांसपेशियों और हड्डियों को मजबूत रखने, एनर्जी बनाए रखने, मूड को संतुलित रखने, निजी स्वास्थ्य और पिता बनने की क्षमता जैसे कई जरूरी शारीरिक कार्यों में अहम भूमिका निभाता है।

उम्र बढ़ने के साथ इसके स्तर में कुछ बदलाव आना सामान्य माना जाता है, लेकिन कई अन्य कारण भी इसके स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि हर व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति अलग होती है, इसलिए इसका असर भी अलग-अलग हो सकता है। आजकल लंबे समय तक बैठे रहना, गलत दिनचर्या और अस्वस्थ आदतों के कारण हॉर्मोनल स्वास्थ्य को लेकर जागरूकता बढ़ रही है। ऐसे में समय रहते सही जानकारी होना जरूरी है। आइए जानते हैं कि क्या पुरुषों का खराब लाइफस्टाइल टेस्टोस्टेरोन को प्रभावित कर सकता है, किन आदतों से इसका स्तर प्रभावित हो सकता है और इसे स्वस्थ बनाए रखने के लिए क्या करना चाहिए।

खराब लाइफस्टाइल पुरुषों के टेस्टोस्टेरोन को कैसे प्रभावित कर सकती है?

अमेरिकन यूरोलॉजिकल एसोसिएशन (AUA) की गाइडलाइन के अनुसार, जिन पुरुषों में टेस्टोस्टेरोन की कमी होती है, उन्हें स्वस्थ लाइफस्टाइल अपनाने की सलाह दी जाती है। इसमें स्वस्थ वजन बनाए रखना, नियमित शारीरिक एक्सरसाइज करना और सही दिनचर्या अपनाना शामिल है। टेस्टोस्टेरोन की कमी होने पर कुछ पुरुषों में एनर्जी की कमी, मांसपेशियों की ताकत घटना, यौन इच्छा में कमी और मूड में बदलाव जैसे लक्षण दिखाई दे सकते हैं।

हालांकि केवल खराब लाइफस्टाइल के आधार पर टेस्टोस्टेरोन की कमी की पुष्टि नहीं की जा सकती। इसके लिए लक्षणों के साथ जांच में टेस्टोस्टेरोन का स्तर भी कम होना जरूरी होता है। अगर किसी पुरुष में लंबे समय तक ऐसे लक्षण बने रहें, तो डॉक्टर से सलाह लेकर आवश्यक जांच करानी चाहिए।

किन आदतों से पुरुषों का टेस्टोस्टेरोन प्रभावित हो सकता है?

पर्याप्त नींद न लेना, शारीरिक एक्टिविटी की कमी, लंबे समय तक तनाव में रहना, गलत खानपान, धूम्रपान, अधिक शराब का सेवन और बढ़ता मोटापा टेस्टोस्टेरोन के स्तर को प्रभावित करने वाले कारकों में शामिल हो सकते हैं।

इसके अलावा लंबे समय तक बैठे रहने और गलत दिनचर्या का भी हॉर्मोनल स्वास्थ्य पर असर पड़ सकता है। हालांकि हर व्यक्ति में इसका प्रभाव अलग-अलग हो सकता है। अगर टेस्टोस्टेरोन से जुड़े लक्षण दिखाई दें, तो डॉक्टर से सलाह लेना बेहतर होता है।

टेस्टोस्टेरोन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए क्या करें?

टेस्टोस्टेरोन के स्वस्थ स्तर को बनाए रखने के लिए संतुलित डाइट लें, नियमित व्यायाम करें और स्वस्थ वजन बनाए रखें। रोजाना 7 से 8 घंटे की अच्छी नींद लेने की कोशिश करें और तनाव को कम करने के लिए योग, मेडिटेशन या अन्य रिलैक्सेशन तकनीकों को अपनाएं।

इसके अलावा धूम्रपान और अधिक शराब के सेवन से बचें। अगर लंबे समय तक थकान, यौन इच्छा में कमी या अन्य लक्षण बने रहें, तो स्वयं दवा लेने के बजाय डॉक्टर से सलाह लेकर जांच कराएं।

मेडिटेशन के दौरान न करें ये 5 गलतियां, लाभ नहीं मिल सकता

मेडिटेशन एक ऐसी प्रक्रिया है, जो हमें मानसिक शांति और आंतरिक शांति प्रदान करती है। हालांकि, कई लोग मेडिटेशन करते समय कुछ ऐसी गलतियां कर बैठते हैं, जिनसे उन्हें पूरा लाभ नहीं मिल पाता। इस लेख में हम आपको कुछ ऐसी सामान्य गलतियों के बारे में बताएंगे, जिन्हें मेडिटेशन करते समय करने से बचना चाहिए ताकि आप अपने मेडिटेशन सत्रों का पूरा लाभ उठा सकें और मानसिक शांति प्राप्त कर सकें।

सही जगह का चयन न करना

मेडिटेशन करते समय सही जगह का चयन करना बहुत जरूरी है। ऐसी जगह चुनें जहां शांति हो और कोई बाहरी शोर-गुल न हो। अगर आप किसी व्यस्त जगह पर मेडिटेशन करेंगे तो आपका ध्यान भंग होगा। इसके अलावा ऐसी जगह चुनें जहां आपको आरामदायक महसूस हो और आपको कोई परेशानी न हो। सही माहौल में मेडिटेशन करने से आपकी मानसिक शांति बढ़ेगी और आप अधिक प्रभावी ढंग से मेडिटेशन कर पाएंगे।

समय का ध्यान न रखना

मेडिटेशन करते समय समय का ध्यान रखना भी जरूरी है। अगर आप जल्दी में हैं या समय की कमी महसूस कर रहे हैं तो आपका ध्यान भंग होगा और आप पूरी तरह से ध्यान में नहीं लग पाएंगे। इसलिए एक निश्चित समय तय करें और उसी दौरान मेडिटेशन करें ताकि आप पूरी तरह से इस प्रक्रिया में शामिल हो सकें। इससे आपका मानसिक शांति और आंतरिक शांति प्राप्त करने का अनुभव बेहतर होगा।

सही मुद्रा न अपनाना

मेडिटेशन करते समय सही तरह से बैठना बहुत जरूरी है। अगर आपकी मुद्रा सही नहीं होगी तो इससे आपकी पीठ में दर्द हो सकता है या शरीर में अकड़न आ सकती है, जिससे आपका ध्यान भंग होगा। इसलिए मेडिटेशन करते समय बैठने की सही मुद्रा अपनाएं और सुनिश्चित करें कि आपका शरीर आरामदायक स्थिति में हो ताकि मानसिक शांति प्राप्त कर सकें। सही मुद्रा से आपका मेडिटेशन अधिक प्रभावी ढंग से होगा।

सांसों पर ध्यान न देना

मेडिटेशन करते समय सांसों पर ध्यान देना बहुत अहम होता है। अगर आप अपनी सांसों की गति पर ध्यान नहीं देंगे तो आपका मन भटक सकता है। इसलिए मेडिटेशन करते समय अपनी सांसों की गहराई और नियमितता पर ध्यान दें ताकि आपका मन स्थिर रहे और आप मानसिक शांति प्राप्त कर सकें। इससे आपकी ध्यान प्रक्रिया अधिक प्रभावी होगी और आप बेहतर अनुभव कर सकेंगे।

मोबाइल फोन का उपयोग करना

आजकल मोबाइल फोन हमारे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है, लेकिन मेडिटेशन करते समय इसका उपयोग करना सही नहीं है। मोबाइल फोन से आने वाली कॉल्स या संदेशों से आपका ध्यान भंग होगा। इसलिए मेडिटेशन करते समय मोबाइल फोन को दूर रखें या इसे साइलेंट मोड पर रख दें ताकि आपका ध्यान स्थिर रहे और आप मानसिक शांति प्राप्त कर सकें।

स्ट्रेस से राहत, सीटिंग जॉब वाले हर घंटे सिर्फ 5 मिनट टहलें, मिलेंगे कई फायदे: स्टडी

रोजाना घंटों सीट पर बैठे रहने का रूटीन दुनियाभर में फॉलो किया जाता है। इस वजह से लगातार थकान, स्ट्रेस और बिगड़ा हुआ लाइफस्टाइल परेशान करता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि हर घंटे में सिर्फ 5 मिनट की सैर शरीर को कई फायदे पहुंचा सकती है। जानें क्या कहती है स्टडी

जो लोग 9 घंटे या इससे ज्यादा देर एक ही जगह बैठे रहने की जॉब करते हैं उन्हें बीच-बीच में ब्रेक जरूर लेना चाहिए। नई रिसर्च सामने आई है जिसके मुताबिक अगर ऐसे लोग हर घंटे में सिर्फ 5 मिनट की सैर करते हैं तो शरीर को ढेरों फायदे मिलती हैं। 5 मिनट टहनले का तरीका सबसे आसान और प्रभावी हो सकता है। रिसर्च कहती है कि इससे न सिर्फ हमारे शरीर को फायदा मिलता है बल्कि मूड अच्छा होता है और थकान भी कम महसूस होती है।

ये रिसर्च मेडिकल जर्नल ब्रिटिश जर्नल ऑफ स्पोर्ट्स मेडिसिन में जारी किया गया है। इसके रिसर्चर कहते हैं कि देर तक एक ही जगह बैठे रहने की वजह से ओबेसिटी, शुगर, दिल की बीमारियां और पुरानी बीमारियों का डर बढ़ जाता है।

कितने लोगों पर किया गया रिसर्च

इस रिसर्च में अमेरिका के कोलंबिया यूनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के रिसर्चर शामिल रहे। इनमें 19300 से ज्यादा वयस्कों को शामिल किया गया। ये सभी नेशनल पब्लिक रेडियो के इंवेट बॉडी इलेक्ट्रिक चैलेंज में शामिल हुए थे। हिस्सा लेने वाले लोगों को हर 30, 60 और 120 मिनट में 5 मिनट का वॉकिंग ब्रेक लेने की सलाह दी गई। इससे पहले इन्होंने 7 दिनों तक अपना नॉर्मल रूटीन फॉलो किया था।

रिसर्च में क्या आया सामने?

प्रतिभागियों ने 21 दिन तक ये रूटीन फॉलो किया और उनमें थकान कम और मूड बेहतर के लक्षण देखे गए। रिसर्च कहती है कि 60 मिनट के अंतराल पर लिया गया 5 मिनट का वॉकिंग ब्रेक ज्यादा कारगर साबित हुए। रिसर्चर के मुताबिक 30 मिनट पर ब्रेक लेने से मूड और एनर्जी दोनों में सुधार था लेकिन इसे नियमित रूप से अपनाना मुश्किल था वहीं 120 मिनट वाले ब्रेक से शरीर में थोड़ा कम असर देखा गया। देखा जाए तो 60 मिनट पर 5 मिनट की सैर का असर पॉजिटिव है और व्यावहारिकता के लिहाज से भी ये बेहतर है। सबसे जरूरी है कि इस रूटीन को नियमित रूप से फॉलो किया जाना जरूरी है।

मिलता है ये फायदा

ये तरीका आपके स्ट्रेस को कम करता है और काम में प्रोडक्टिविटी भी बढ़ती है। जो लोग ऑफिस में बैठकर घंटों काम करते हैं उनके लिए ये तरीका रामबाण इलाज साबित हो सकता है। हर घंटे केवल 5 मिनट टहलने की आदत आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए लाभकारी हो सकती है।

शरीर को मिलते हैं ये फायदे

इस तरह की फिजिकल एक्टिविटी को अपनाना सबसे आसान है। इस तरह आप दिनभर में कम से कम 30 मिनट की सैर कर लेते हैं और टाइम का पता भी नहीं चलता। सैर करने से हमारी हड्डियां और मांसपेशियां मजबूत बन पाती है। जिन्हें पैरों में दर्द रहता है उन्हें एक्सपर्ट की सलाह पर वॉकिंग का रूटीन फॉलो करना चाहिए।

ईपीएफओ का बड़ा अलर्ट! 3 दिन तक नहीं कर पाएंगे पीएफ क्लेम

ईपीएफओ ने तकनीकी अपग्रेडेशन के चलते 26 से 28 जून 2026 तक क्लेम जमा करने और प्रोसेसिंग सेवाएं अस्थायी रूप से बंद रखने का फैसला किया है। वहीं, UMANG ऐप पर EPFO सेवाएं 2 जुलाई तक प्रभावित रह सकती हैं।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के करोड़ों सदस्यों के लिए महत्वपूर्ण खबर है। EPFO ने अपने ऑनलाइन क्लेम सिस्टम को अपग्रेड करने के लिए तीन दिनों के निर्धारित रखरखाव की घोषणा की है। इसके चलते 26 जून से 28 जून 2026 तक EPF क्लेम जमा करने और उनकी प्रोसेसिंग से जुड़ी सेवाएं अस्थायी रूप से बंद रहेंगी।

EPFO के अनुसार, यह कदम सेवा गुणवत्ता में सुधार, क्लेम प्रोसेसिंग को अधिक तेज और प्रभावी बनाने तथा यूजर्स को बेहतर अनुभव देने के लिए उठाया जा रहा है। संगठन अपने डेटाबेस को एकीकृत करने और सॉफ्टवेयर सिस्टम को अपग्रेड करने का काम करेगा।

इन तारीखों में नहीं कर पाएंगे क्लेम जमा

EPFO की ओर से जारी नोटिस के मुताबिक, 26 जून 2026 को रात 12 बजे से लेकर 28 जून 2026 की रात 11:59 बजे तक पोर्टल पर नए क्लेम जमा नहीं किए जा सकेंगे। इसके अलावा क्लेम प्रोसेसिंग की सुविधा भी इस अवधि के दौरान उपलब्ध नहीं होगी।

इसका असर उन सदस्यों पर भी पड़ेगा जिन्होंने पहले से क्लेम जमा कर रखा है। ऐसे मामलों की प्रोसेसिंग अपग्रेडेशन कार्य पूरा होने के बाद ही शुरू की जाएगी। EPFO ने बताया है कि सभी सेवाएं 29 जून 2026 से फिर सामान्य रूप से बहाल कर दी जाएंगी।

UMANG ऐप पर भी प्रभावित रहेंगी सेवाएं

EPFO की सेवाओं का उपयोग करने वाले UMANG ऐप यूजर्स को भी कुछ दिनों तक इंतजार करना पड़ सकता है। ऐप पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार, EPFO से जुड़ी सेवाएं 2 जुलाई 2026 तक निर्धारित रखरखाव के कारण प्रभावित रहेंगी।

UMANG ऐप के जरिए सदस्य PF बैलेंस चेक करने, क्लेम दाखिल करने, UAN से जुड़ी सेवाओं का लाभ लेने, शिकायत दर्ज कराने और जीवन प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करने जैसी कई सुविधाओं का उपयोग करते हैं। हालांकि रखरखाव अवधि के दौरान इनमें से कुछ सेवाएं उपलब्ध नहीं रहेंगी।

EPF पर मिलेगा 8.25 फीसदी ब्याज

इस बीच EPFO सब्सक्राइबर्स के लिए राहत की खबर भी है। सरकार ने वित्त वर्ष 2025-26 के लिए EPF जमा राशि पर 8.25 प्रतिशत ब्याज दर को मंजूरी दे दी है। इससे करोड़ों कर्मचारियों के PF खातों में ब्याज की राशि जमा की जाएगी।

ऐसे चेक करें अपना PF बैलेंस

अगर EPFO पोर्टल या ऐप की सेवाएं प्रभावित हैं, तब भी सदस्य मिस्ड कॉल और SMS के जरिए अपना PF बैलेंस जान सकते हैं। रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर से 011-22901406 पर मिस्ड कॉल देकर PF बैलेंस की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा 7738299899 पर EPFOHO UAN ENG लिखकर SMS भेजने पर भी बैलेंस और हालिया योगदान की जानकारी मिल जाती है। हालांकि इन सुविधाओं का लाभ लेने के लिए UAN का आधार, PAN और बैंक खाते से लिंक होना जरूरी है।

पहले से कर लें जरूरी काम

विशेषज्ञों का कहना है कि जिन कर्मचारियों को निकट भविष्य में PF क्लेम दाखिल करना है या किसी EPFO सेवा का उपयोग करना है, वे 26 जून से पहले अपना काम पूरा कर लें। इससे उन्हें सिस्टम बंद रहने के दौरान किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

फ्री राशन पर नया अपडेट : इन परिवारों को मिलेगा प्रति व्यक्ति 7 किलो अनाज

सरकार 'अंत्योदय अन्न योजना' (AAY) के तहत अनाज के हक को प्रति परिवार हर महीने तय 35 किलो से बदलकर प्रति व्यक्ति हर महीने 7 किलो (अधिकतम 35 किलो की सीमा के साथ) करने पर विचार कर रही है। इस कदम से बड़े गरीब परिवारों को फ़ायदा होगा। खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग ने 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013' में संशोधन का प्रस्ताव दिया है और खाद्य मंत्रालय ने 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा (संशोधन) विधेयक, 2026' पर 13 जुलाई तक जनता से राय मांगी है।

क्या है मौजूदा व्यवस्था

मौजूदा कानून के तहत, AAY परिवारों (जिन्हें सबसे गरीब माना जाता है) को परिवार के आकार की परवाह किए बिना हर महीने एक परिवार के लिए 35 किलो अनाज मिलता है। इसके विपरीत, 'प्राथमिकता वाले परिवारों' को प्रति व्यक्ति हर महीने 5 किलो अनाज मिलता है। इस व्यवस्था का नतीजा यह हुआ है कि बड़े AAY परिवारों को अक्सर 'प्राथमिकता वाले परिवारों' के सदस्यों की तुलना में प्रति व्यक्ति कम अनाज मिलता है – जबकि यह श्रेणी उन लोगों के लिए है जो AAY लाभार्थियों की तुलना में कम कमज़ोर स्थिति में हैं।

किन्हें मिलेगा नए नियम का फायदा

मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि अंत्योदय अन्न योजना के तहत मौजूदा परिवार-आधारित हक का मकसद सबसे कमज़ोर परिवारों की सुरक्षा करना था, लेकिन परिवार के आकार के आधार पर इससे काफ़ी असमानता पैदा होती है। प्रस्तावित व्यवस्था के तहत, दो सदस्यों वाले AAY परिवार को हर महीने 14 किलो अनाज मिलेगा, जबकि पांच या उससे ज्यादा सदस्यों वाले परिवार को मौजूदा 35 किलो की सीमा के अनुसार अनाज मिलेगा। छोटे परिवारों के लिए कुल मात्रा में शायद ही कोई बदलाव हो, लेकिन बड़े परिवारों को फायदा होगा क्योंकि अनाज का आवंटन परिवार के आकार के हिसाब से होगा।?

क्या है नए नियम का मकसद?

सरकार ने इस संशोधन को 'मानव जीवन चक्र दृष्टिकोण' (human life cycle approach) के जरिए खाद्य और पोषण सुरक्षा को मजबूत करने की अपनी व्यापक कोशिश के हिस्से के तौर पर तैयार किया है। इसका मकसद 'राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013' के लक्ष्यों के अनुरूप, किफायती कीमतों पर अच्छी गुणवत्ता वाला और पर्याप्त मात्रा में भोजन उपलब्ध कराना है। फिलहाल, प्राथमिकता वाले परिवारों और AAY, दोनों को चावल और गेहूं मुफ्त में दिए जाते हैं।

इबोला प्रभावित देश से आने वालों को देना होगा सेहत का ब्योरा, सरकार ने शुरू किया एयर सुविधा पोर्टल

इबोला वायरस का प्रकोप मध्य और पूर्वी अफ्रीका तक सीमित है। हालांकि, फ्रांस भी अलर्ट मोड पर आ चुका है। इबोला से प्रभावित देशों से आने वाले यात्रियों को लेकर भारत अलर्ट हो गया। इबोला से प्रभावित देशों से आने वाले या वहां से गुजरने वाले यात्रियों के लिए एयर सुविधा पोर्टल एक्टिव है। यात्री उतरने से पहले जरूरी सेल्फ-डिक्लेरेशन फॉर्म (एसडीएफ) आसानी से ऑनलाइन जमा कर सकते हैं। इससे पहले पेपर-बेस्ड प्रक्रिया फॉलो की जा रही थी। सूत्रों के अनुसार, विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) द्वारा इबोला को अंतरराष्ट्रीय चिंता वाली सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातस्थिति (पीएचईआईसी) घोषित किए जाने के बाद से यह व्यवस्था लागू है। इसके तहत प्रवेश बिंदुओं (एयरपोर्ट, बंदरगाह आदि) पर स्वास्थ्य निगरानी को मजबूत करने के साथ-साथ यात्रियों की आवाजाही को सुगम बनाने के उपाय भी किए गए हैं। फ्रांस ने पांच ऐसे लोगों की पहचान की है और उन्हें आइसोलेट किया है जो इबोला वायरस से संक्रमित हो सकते हैं। ये लोग एक डॉक्टर के साथ फ्लाइट में सफर कर रहे थे, जिसका वायरस टेस्ट पॉजिटिव आया था। फ्रांस की स्वास्थ्य मंत्री स्टेफनी रिस्ट ने बुधवार (स्थानीय समय) को कहा कि डॉक्टर ने फ्रांस लौटने से पहले डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो में काम किया था। मंत्री के अनुसार, मरीज एक अनुभवी डॉक्टर है जो एक मिशन से लौटे हैं, जिन्हें पता नहीं था कि उन्हें वायरस हो गया है। जब वह प्लेन में बैठे, तो उनमें कोई लक्षण नहीं था। वह एक डॉक्टर है और विमान में उन्हें सिरदर्द हुआ, इसलिए उन्होंने अलर्ट जारी किया ताकि पेरिस पहुंचने पर उनका ध्यान रखा जा सके। जैसे ही उनकी फ्लाइट लैंड हुई, उन्हें हॉस्पिटल में आइसोलेशन में रखा गया। मंत्री ने आगे कहा कि वह 21 दिनों तक, जो कि इन्क्यूबेशन पीरियड का समय है, वहीं रहेंगे। यूरोपीय सेंटर फॉर डिजीज प्रिवेंशन एंड कंट्रोल का अनुमान है कि यूरोप में रहने वाले लोगों के लिए संक्रमण का खतरा बहुत कम है। इस बीच, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (डीआरसी) में इबोला के 1,118 कन्फर्म मामले सामने आए हैं, जिनमें 291 मौतें शामिल हैं।

होर्मुज में फिर बढ़ा तनाव, हमले के बाद फंसे कई जहाज, UN एजेंसी ने निकालने का काम रोका

वॉशिंगटन, एजेंसी। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज में एक बार फिर तनाव बढ़ गया है। एक जहाज पर हमले के बाद संयुक्त राष्ट्र की समुद्री एजेंसी ने जहाजों को निकालने का काम रोक दिया है। जानकारी के मुताबिक, हमला ओमान के तट के पास हुआ था।ब्रिटिश सेना ने बयान जारी कर जहाज को निशाना बनाए जाने के बारे में जानकारी दी थी। अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन के प्रमुख ने कहा कि होर्मुज स्ट्रेट में फंसे जहाजों को निकालने का काम तब तक रुका रहेगा, जब तक एजेंसी निकासी सूची में शामिल और उस इलाके में मौजूद जहाजों की सुरक्षा गारंटी सुनिश्चित नहीं कर लेती।

फिलहाल यह स्पष्ट नहीं है कि हमला किसने किया और किस जहाज को निशाना बनाया गया। इससे पहले ईरान ने जहाजों को चेतावनी दी थी कि वे तेहरान की मंजूरी के बिना, होर्मुज स्ट्रेट से होकर जाने वाले संयुक्त राष्ट्र के मान्यता प्राप्त रास्ते का इस्तेमाल न करें।

जहाजों की निकासी रोकी

दरअसल संयुक्त राष्ट्र की समुद्री एजेंसी ने होर्मुज स्ट्रेट के जरिए जहाजों की निकासी की योजना को रोक दिया है। यह कदम तब उठाया गया है, जब ब्रिटिश सेना ने जानकारी दी कि गुरुवार को ओमान के तट के पास एक जहाज पर प्रक्षेप्य (प्रोजेक्टाइल) से हमला किया गया है।अंतरराष्ट्रीय समुद्री संगठन के प्रमुख ने कहा कि जब तक एजेंसी को निकासी सूची में शामिल जहाजों और पूरे क्षेत्र के लिए सुरक्षा की गारंटी की पुष्टि नहीं हो जाती, तब तक इस योजना को स्थगित रखा जाएगा।

ईरान ने दी धमकी

यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह मिसाइल किसने दागा और किस प्रकार के जहाज को निशाना बनाया गया था। यह हमला उस खबर के कुछ घंटे बाद हुआ, जिसमें कहा गया था कि ईरान ने बिना इजाजत होर्मुज स्ट्रेट से गुजरने वाले जहाजों को रोकने की धमकी दी है।

इजराइली हमले में तीन लोगों की मौत

दक्षिणी लेबनान के नबातियेह इलाके के बाहरी हिस्से में इजराइली हमले में तीन लोगों की मौत हो गई है। यह हमला उस समय हुआ है, जब वाशिंगटन में बातचीत जारी है। इजराइली सेना दक्षिणी लेबनान के उन इलाकों में आने-जाने वाले लोगों को लगातार निशाना बना रही है, जिन पर उसका कब्जा है। लेबनान के स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार, मार्च में युद्ध शुरू होने के बाद से अब तक 4,000 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है।

PoJK में उबाल बरकरार : 17वें दिन भी जारी विरोध प्रदर्शन, रावलकोट में 50 हजार से ज्यादा लोग जुटे

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर (PoJK) में जारी विरोध प्रदर्शन थमने का नाम नहीं ले रहा है। आंदोलन के 17वें दिन रावलकोट के ईदगाह मैदान में हजारों लोग एकत्र हुए। आयोजकों का दावा है कि रैली में 50 हजार से अधिक लोगों ने हिस्सा लिया, जिससे यह हाल के वर्षों में क्षेत्र के सबसे बड़े प्रदर्शनों में शामिल हो गई है। आवामी एक्शन कमेटी के नेतृत्व में चल रहे इस आंदोलन में लोग महंगाई, आर्थिक संकट, प्रशासनिक व्यवस्था और राजनीतिक अधिकारों से जुड़े मुद्दों को लेकर आवाज उठा रहे हैं। सुरक्षा बंदोबस्त और प्रशासनिक प्रतिबंधों के बावजूद प्रदर्शन लगातार जारी है, जबकि पाकिस्तान की राजनीति में भी इसे लेकर बहस तेज हो गई है।

आंदोलन में महिलाओं और सोशल मीडिया से जुड़े लोगों की भागीदारी लगातार बढ़ रही है। सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर रानीमा शाजमा का एक वीडियो भी चर्चा में है, जिसमें उन्होंने स्थानीय लोगों की समस्याओं और प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाए हैं।

रावलकोट में एक्शन कमेटी के नेता सरदार अमन खान ने क्षेत्र को अधिक राजनीतिक अधिकार देने की मांग दोहराई। उन्होंने कहा कि कश्मीर से जुड़े फैसले वहां के लोगों की इच्छा और आकांक्षाओं के अनुरूप होने चाहिए। साथ ही उन्होंने क्षेत्र की चुनावी व्यवस्था पर भी सवाल उठाए।

जरूरी सामान की सप्लाई पर असर का आरोप

प्रदर्शनकारियों का आरोप है कि पाकिस्तान से PoJK जाने वाले मार्गों पर आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित हो रही है। सोशल मीडिया पर साझा किए गए कुछ वीडियो में खाद्य सामग्री और अन्य जरूरी सामान से लदे ट्रकों के रुके होने का दावा किया गया है। आंदोलनकारियों का कहना है कि इससे आम लोगों की परेशानियां बढ़ रही हैं।

सरकारी कर्मचारियों पर कार्रवाई के आरोप

आंदोलन से जुड़े संगठनों का दावा है कि प्रदर्शन में भाग लेने के आरोप में कई सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ कार्रवाई की गई है। कुछ रिपोर्टों में 128 कर्मचारियों को सेवा से हटाए जाने का दावा किया गया है। इसके अलावा सेवानिवृत्त सैन्य कर्मियों को भी आंदोलन से दूर रहने की चेतावनी दिए जाने के आरोप लगाए गए हैं। आंदोलन से जुड़े संगठनों का कहना है कि प्रदर्शन के दौरान कई लोगों की मौत हुई है और बड़ी संख्या में लोगों को हिरासत में लिया गया है। हालांकि प्रशासन का कहना है कि कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक कार्रवाई की जा रही है।

तीसरे सप्ताह में पहुंचा आंदोलन

PoJK में जारी आंदोलन अब तीसरे सप्ताह में प्रवेश कर चुका है। फिलहाल हालात सामान्य होते नहीं दिख रहे हैं। दक्षिण एशिया के कई विश्लेषक घटनाक्रम पर नजर बनाए हुए हैं और इसके क्षेत्रीय राजनीति पर संभावित प्रभाव का आकलन कर रहे हैं। इन प्रदर्शनों को लेकर पाकिस्तान की राजनीति में भी बहस तेज हो गई है। संसद में रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ द्वारा प्रदर्शनकारियों की आलोचना किए जाने के बाद उनके बयान को लेकर नया विवाद खड़ा हो गया है।

ट्रंप की धमकियां और ईरान के पलटवार... शर्तों को लेकर फिर खड़ा होने लगा विवाद

वॉशिंगटन, एजेंसी। 14 सूत्री MoU अरब में शांति की उम्मीद माना जा रहा था लेकिन अब इसकी शर्तों को लेकर एक बार फिर विवाद खड़ा होने लगा है। इसकी वजह ट्रंप की धमकियों को माना जा रहा है। दरअसल डोनाल्ड ट्रंप बार-बार धमकियां देकर खुद को वार्ता में सुप्रीम दिखाने की कोशिश में हैं। मगर, उनकी यही कोशिश एक बार फिर जंग की वजह बन सकती है।

अभी तक डोनाल्ड ट्रंप ईरान को वार्ता की मेज पर लाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे लेकिन अब उन्होंने ईरान से वार्ता खत्म कर विध्वंस की धमकी देना शुरू कर दिया है। इन धमकियों के केंद्रो में होर्मुज और परमाणु निरीक्षण को लेकर शुरू हुआ वो गतिरोध है, जो ईरान-अमेरिका के बीच अविश्वास को और पक्का कर रहा है।

ट्रंप का दावा और ईरान का जवाब

ट्रंप साफ कह चुके हैं कि होर्मुज अब पहले की तरह खुला रहेगा। अगर कोई यहां नियंत्रण करेगा तो वो अमेरिकी सेना होगी। जबकि ईरान कह रहा है कि होर्मुज फिलहाल खुला हुआ है लेकिन भविष्य में इसका प्रबंधन कैसे होगा, इसका फैसला होना बाकी है। यानी अमेरिका होर्मुज का मुद्दा हल होने का दावा जरूर कर रहा है लेकिन फाइनल डील में ईरान इसपर भी चर्चा करने वाला है क्योंकि वो होर्मुज का कंट्रोल पूरी तरह से छोड़ना नहीं चाहता।

इधर 48 घंटे पहले ट्रंप ने दावा किया था कि ईरान परमाणु स्थलों में IAEA अधिकारियों के निरीक्षण के लिए तैयार है, जिनके साथ अमेरिकी अधिकारी भी शामिल होंगे लेकिन ईरान ने इन दावों को खारिज कर दिया है। ईरान ने कहा है स्विट्जरलैंड में राफेल ग्रोसी से साथ कोई बैठक नहीं हुई। फिलहाल परमाणु ठिकानों तक पहुंच देने की कोई योजना नहीं है। इस मुद्दे पर आखिरी फैसला फाइनल समझौते के साथ ही होगा।

अमेरिका को ईऱान की धमकी

ईरान से आ रही खबरों से स्पष्ट है कि मुज्तबा परमाणु स्थलों पर अधिकारियों को जाने देने की छूट दे सकते हैं लेकिन ये निर्भर इस बात पर करेगा कि उनके मुताबिक फाइनल समझौता हो पाता है या नहीं। सिर्फ इतना ही नहीं ईरान ने धमकी दी है कि अमेरिका की तरफ से होती गलत बयानबाजी और धमकियां वार्ता को डिरेल कर सकती हैं। साफ है कि डोनाल्ड ट्रंप बार-बार धमकी का डर दिखाकर ईरान को वार्ता की मेज पर झुकाने की कोशिश में हैं। ताकि किसी तरह खुद को फाइनल विजेता की कुर्सी के करीब ले सकें लेकिन उनकी ये कोशिश वार्ता को बेपटरी कर सकती है, जो ईरान युद्ध फिर भड़कने का कारण बनेगा।

उत्तराखंड और हिमालयी राज्यों में भूकंप के झटके आने से पहले मिलेगा अलर्ट

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया के अन्य देशों की तरह भारत के पास भी भूकंप की पहले से सटीक भविष्यवाणी करने वाली कोई वैज्ञानिक तकनीक नहीं है। हालांकि, भारत ने हिमालयी क्षेत्र में ऐसे भूकंपीय निगरानी नेटवर्क और क्षेत्रीय भूकंप पूर्व चेतावनी प्रणालियां विकसित की हैं, जो भूकंप शुरू होने के तुरंत बाद और खतरनाक झटके पहुंचने से कुछ सेकंड पहले लोगों को अलर्ट कर सकती हैं।

अर्ली वार्निंग सिस्टम को और बेहतर बनाने की दिशा में सबसे सफल प्रयास आईआईटी रुड़की ने उत्तराखंड सरकार के साथ मिलकर किया है। दोनों ने मिलकर भूदेव नाम का एक अत्याधुनिक भूकंप पूर्व चेतावनी ऐप विकसित किया है। यह ऐप भूकंप के खतरों से निपटने और स्थानीय लोगों की सुरक्षा व लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करता है।

सरकार ने बीते दिसंबर में संसद को बताया था कि पूरे हिमालयी क्षेत्र में अर्ली वार्निंग सिस्टम को समर्पित रियल-टाइम भूकंपीय नेटवर्क शुरू किया गया है। इसके साथ ही, नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी क्षेत्रीय डेटा का उपयोग करके प्रोटोटाइप ईईडब्ल्यू एल्गोरिदम विकसित और टेस्ट कर रहा है। इसके जरिए पी-वेव की सटीक पहचान, भूकंप की तीव्रता का तेजी से अनुमान और झटके आने से पहले की सटीक भविष्यवाणी की जा सकेगी।

कैसे काम करता है अर्ली वार्निंग सिस्टम?

जब भी कोई भूकंप आता है, तो उसमें से पी-वेव्स निकलती हैं। ये तरंगें सबसे तेजी से यात्रा करती हैं और आमतौर पर कम नुकसान पहुंचाती हैं। ईईडब्ल्यू सिस्टम भूकंप के एपिसेंटर के पास इन्हीं शुरुआती पी-वेव्स को पकड़ लेता है। इसके बाद, विनाशकारी तरंगों के पहुंचने से पहले ही दूर स्थित इलाकों में अलर्ट भेज दिया जाता है। इस तकनीक से प्रशासन और आम लोगों को सायरन बजाने या सुरक्षित स्थानों पर पहुंचने के लिए कुछ बेहद कीमती सेकंड मिल जाते हैं। इस सिस्टम से मिलने वाला चेतावनी का समय इस बात पर पूरी तरह निर्भर करता है कि कोई शहर या इलाका भूकंप के केंद्र से कितनी दूर है। इसका सीधा मतलब यह है कि अगर आप भूकंप के केंद्र के बिल्कुल करीब हैं, तो आपको चेतावनी का समय नहीं के बराबर मिलेगा। वहीं, अगर भूकंप का केंद्र सैकड़ों या हजारों किलोमीटर दूर है, तो बचाव के लिए कुछ अतिरिक्त और बेहद अहम सेकंड मिल सकते हैं।

भारत में कहां लगे हैं सेंसर?

भारत में यह सेंसर नेटवर्क मुख्य रूप से उत्तराखंड के गढ़वाल और कुमाऊं क्षेत्रों में स्थापित किया गया है। इन सेंसरों को जानबूझकर सक्रिय फॉल्ट जोन के बहुत करीब रखा गया है। जब ये सेंसर पी-वेव्स को डिटेक्ट करते हैं, तो तेज झटके आने से पहले आसपास के शहरों में अलर्ट भेज देता है। दुनिया के अन्य देशों की बात करें तो फिलहाल जापान, ताइवान और अमेरिका के पास सबसे उन्नत भूकंप पूर्व चेतावनी प्रणालियां मौजूद हैं।

केंद्र सरकार पर संजय राउत का हमला, कहा– राम मंदिर के चढ़ावे के पैसे से खरीदे जा रहे सांसद

मुंबई, एजेंसी। राम मंदिर चढ़ावा विवाद के मामले पर सियासत तेज हो गई है। शिवसेना (यूबीटी) से राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने भी बड़ा सवाल खड़ा किया है। शुक्रवार को प्रेसवार्ता कर कहा कि राम मंदिर चढ़ावा के मुख्य आरोपी अभी भी फरार हैं। इसका इस्तेमाल सांसदों को खरीदने में किया जा रहा है।

शिवसेना (यूबीटी) से राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने शुक्रवार को अयोध्या राम मंदिर चंदे में कथित हेराफेरी के मामले में 8 लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज होने पर कहा, 'मुख्य आरोपी अभी भी ट्रस्ट में काम कर रहे हैं। जो लोग खुद को 'हिंदुत्ववादी' मानते हैं, वे मंदिर से करोड़ों रुपये चुराते हैं और यह पैसा राजनीति में आता है, जहां इसका इस्तेमाल सांसदों को खरीदने और राजनीतिक दलों को तोड़ने के लिए किया जाता है। आपने राम मंदिर से चुराए गए 2000 करोड़ रुपये का इस्तेमाल टीएमसी और शिवसेना (यूबीटी) के सांसदों को तोड़ने के लिए किया।'

ऑपरेशन टाइगर पर क्या बोला?

शिवसेना (यूबीटी) राज्यसभा सदस्य संजय राउत ने ऑपरेशन टाइगर के तहत शिवसेना (यूबीटी) के छह सांसद एकनाथ शिंदे की शिवसेना में शामिल होने पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन टाइगर के तहत कुछ नहीं हुआ है। आप टाइगर को बदनाम मत करो। एक तो मान लिया ना? हम सब लोग आज भी टाइगर हैं। अगर हम टाइगर हैं, तो जो आपके साथ चले गए वह कौन हैं? लोमड़ी है। आप लोग लोमड़ी हैं, हम टाइगर हैं। आप टाइगर के आस-पास नहीं जा सकते हो, इसीलिए लोगों को वाई प्लस की सुरक्षा दी गई है।

'शिवसेना हमारी पार्टी है'

उन्होंने कहा कि लोगों को टाइगर से डरना चाहिए, वह आप लोगों को खा सकता है। आप लोग सुरक्षा और मंत्रालय में बैठकर हमसे बात कर रहे हो, सबसे पहले आपको अपनी पार्टी बनानी चाहिए, शिवसेना हमारी पार्टी है, वह आप लोगों की नहीं है। आपने सुप्रीम कोर्ट, चुनाव आयोग और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के आशीर्वाद से हमारी पार्टी ले ली है। आप पहले खुद का सिंबल लेकर चुनाव लड़ें, उसके बाद हमसे बात करना। संजय राउत ने कहा कि यह 'ऑपरेशन डैमेज कंट्रोल' की क्या बात है? गद्दार तो चले गए, अब डैमेज क्या? वहां जो कार्यकर्ता हैं, लाखों, जो वफादार हैं, निष्ठावान हैं।

तमन्ना भाटिया सिनेमा में महिलाओं की स्थिति पर बोलीं- बॉलीवुड में आजादी और साउथ में पितृसत्ता

मशहूर अभिनेत्री तमन्ना भाटिया ने बॉलीवुड और साउथ फिल्म इंडस्ट्री के बीच के बड़े अंतर को लेकर खुलकर बात की है। उन्होंने साउथ सिनेमा में महिलाओं की स्थिति और वहां हावी पितृसत्तात्मक सोच पर सवाल उठाते हुए कहा कि हिंदी सिनेमा अभिनेत्रियों को किरदारों के चुनाव में कहीं ज्यादा आजादी और विविधता देता है। तमन्ना का मानना है कि कमर्शियल स्तर पर साउथ सिनेमा महिलाओं के लिए ज्यादा सीमित है।

तमन्ना ने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री और दक्षिण भारतीय सिनेमा के बीच के अंतरों पर बेहद बेबाक तरीके से बात की। तमन्ना ने इस बात पर जोर दिया कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री कलाकारों को अपने किरदारों के चयन में अधिक लचीलापन और स्वतंत्रता देती है। उनके मुताबिक, बॉलीवुड में कलाकारों के सामने ये सख्त शर्त नहीं होती कि उन्हें हर व्यावसायिक मापदंड पर खरा उतरना ही है।

तमन्ना के अनुसार, बॉलीवुड में 2 तरह के कलाकार होते हैं। कलात्मक नजरिए वाले अभिनेता कुछ खास किरदारों तक सीमित रहते हैं और उनके लिए ग्लैमरस डांस जरूरी नहीं होता। बॉलीवुड कलाकारों को कलात्मक या व्यावसायिक में से कोई एक रास्ता चुनने का विकल्प देता है, वहीं, साउथ सिनेमा पर उन्होंने कहा कि वहां व्यावसायिक फिल्मों में महिलाओं को अक्सर एक खास नजरिए से दिखाया जाता है, जो कभी-कभार पितृसत्तात्मक लग सकता है।

तमन्ना के मुताबिक, बॉलीवुड के उलट साउथ में अभिनेत्रियों से ये उम्मीद की जाती है कि वे अभिनय और व्यावसायिकता दोनों में एक साथ महारत हासिल करें। अगर किसी अभिनेत्री को वहां लंबे समय तक टिके रहना है तो वो केवल किसी एक रास्ते को नहीं चुन सकती। उसे गंभीर अभिनय के साथ-साथ फिल्मों के कमर्शियल पहलुओं जैसे ग्लैमर और डांस को भी बखूबी संभालना होता है। इस वजह से ये इंडस्ट्री कुछ मायनों में अधिक प्रतिबंधात्मक हो जाती है।

तमन्ना ने डांस नंबर्स पर भी बात की और आइटम सॉन्ग्स के साथ अक्सर जुड़े रहने वाले कलंक का बचाव किया। वो उनके मनोरंजन मूल्य को रेखांकित करते हुए उन्हें पार्टी गाने कहना पसंद करती हैं। करीना कपूर और कैटरीना कैफ जैसी अभिनेत्रियों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि ऐसे गाने अक्सर फिल्मों से भी ज्यादा लंबे समय तक टिके रहते हैं और अपने आप में सांस्कृतिक पल बन जाते हैं।

थलाइवर 173 का टाइटल रिवील, कमल हासन की फिल्म धर्मन : द डेडली डॉक्टर से रजनीकांत का फर्स्ट लुक आउट

तमिल सिनेमा की सुपरहिट जोड़ी एक बार फिर बड़े पर धमाल मचाने आ रही है। फिल्म मेकर ने थलाइवर 173 के टाइटल का एलान कर दिया है। थलाइवर 173 को धर्मनः द डेडली डॉक्टर टाइटल दिया गया है। साथ ही फिल्म के हीरो रजनीकांत का भी फर्स्ट लुक सामने आ चुका है। रजनीकांत फिल्म से आए अपने फर्स्ट लुक में बहुत ही स्वैग में दिख रहे हैं। फिलहाल यह खुलासा नहीं किया गया है कि फिल्म कब तक रिलीज होगी।

फिल्म धर्मन से आए फर्स्ट लुक में रजनीकांत का अलग ही स्वैग देखने के मिल रहा है। वह ब्लू कॉस्ट्यूम हैं और उनके हाथ खून से सने हैं। इनके पैरों के नीचे एक गुंडा जख्मी पड़ा है। रजनीकांत ने उसकी छाती पर मुस्कुराते हुए पैर रखा हुआ है। थलाइवा ने सर्जिकल ग्लव्स पहने हुए हैं और वह एक ऑपरेशन थिएटर में दिख रहे हैं। बता दें, फिल्म का निर्देशन अश्वत्थ मरिमुथु कर रहे हैं और इससे पहले फिल्म का निर्देशन करने के लिए सुंदर का नाम आ रहा था। अश्वत्थ मरिमुथु साल 2025 में रिलीज हुई ड्रैगन और ओह माई कडावलु से पॉपुलर हैं।

इससे पहले 5 नवंबर 2025 को कमल हसन और मेकर्स ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर आधिकारिक एलान किया था कि सुपरस्टार रजनीकांत आगामी फिल्म थलाइवर 173 में अभिनय करेंगे। कमल हासन और रजनीकांत की एक तस्वीर के साथ इसकी आधिकारिक एलान किया गया था। यह फिल्म 2027 में पोंगल के मौके पर रिलीज होने जा रही है होगी।

अपने प्रोडक्शन हाउस राज कमल फिल्म्स इंटरनेशनल द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान को एक्स हैंडल पर साझा करते हुए कमल हासन ने एक तमिल कविता लिखी थी, जिसका अनुवाद इस प्रकार है, हवा की तरह, बारिश की तरह, नदी की तरह, हम बहेंगे, चलो बारिश करें, आनंद लें, जीएं। सुपरस्टार रजनीकांत सुंदर सी की निर्देशित और राजकमल फिल्म्स इंटरनेशनल की निर्मित फिल्म में अभिनय करेंगे।

मेकर्स की ओर से एक बयान भी जारी किया था, जिसमें कहा गया था, सुपरस्टार रजनीकांत कमल हासन की राजकमल फिल्म्स इंटरनेशनल बैनर तले बनी फिल्म थलाइवर 173 में मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।

उनके प्रोडक्शन हाउस के बयान में कहा गया था, सुपरस्टार रजनीकांत, कमल हासन के राजकमल फिल्म्स इंटरनेशनल बैनर तले थलाइवर 173 में मुख्य भूमिका निभाने के लिए तैयार हैं।

जल्द खत्म होगा इंतजार, सामने आई मिर्जापुर : द मूवी की टीजर रिलीज डेट, पोस्टर ने बढ़ाई सिनेप्रेमियों की हलचल

मिर्जापुर वाला स्टोरी कंटेंट एक बार भौकाल मचाने वाला है, क्योंकि मिर्जापुर द मूवी ने दर्शकों के बीच में जबरदस्त माहौल सेट कर दिया है। अब मिर्जापुर द मूवी की एक झलक देखने के तैयार बैठे दर्शकों के लिए मेकर्स ने बड़ा सरप्राइज छोड़ा है। दरअसल, टीजर लॉन्च से पहले, मेकर्स ने एक शानदार नया पोस्टर जारी किया है, जिसने फैन्स को एक बार फिर मिर्जापुर की दुनिया की एक झलक दिखाई है।

साल की सबसे मोस्ट-अवेटेड फिल्मों में से एक होने के नाते, इस फ्रेंचाइजी को लेकर एक्साइटमेंट लगातार बढ़ती जा रही है, और टीजर की अनाउंसमेंट ने इस बज (चर्चा) को और ज्यादा बढ़ा दिया है। बता दें, आज 25 जून को मिर्जापुर द मूवी का टीजर रिलीज होने जा रहा है, जिसने अभी से दर्शकों की बेचैनी को बढ़ा दिया है, क्योंकि पोस्ट की टैगलाइन ने दर्शकों के माइंड को ट्रिगर किया है, जिसमें लिखा है गद्दी है तो हम है। जैसा कि सभी जानते हैं कि मिर्जापुर फ्रेंचाइजी का पूरी स्टोरी कंटेंट राजनीतिक गद्दी पर भी टिका है।

इस पोस्टर के सेंटर में वही आइकॉनिक गद्दी दिखाई दे रही है जिसके दोनों तरफ बंदूकें रखी हुई हैं, जो तुरंत उस पावर स्ट्रगल (सत्ता की जंग), दुश्मनी और ड्रामे की यादों को ताजा कर देती है जिसने मिर्जापुर को एक सनसनी बना दिया था।

भले ही यह पोस्टर फिल्म की कहानी को छुपाकर रखता है, लेकिन यह याद दिलाता है कि मिर्जापुर की दुनिया एक बहुत बड़े पैमाने पर वापसी के लिए तैयार है। कल आने वाले टीजर के साथ, फैन्स को एक खास ट्रीट मिलने वाली है क्योंकि उन्हें फिल्म की पहली झलक देखने को मिलेगी।

अमेजन एमजीएम स्टूडियोज और एक्सेल एंटरटेनमेंट द्वारा प्रेजेंटेड, मिर्जापुरः द मूवी गुरमीत सिंह द्वारा डायरेक्टेड, पुनीत कृष्णा द्वारा रिटेन और एक्सेल एंटरटेनमेंट के बैनर तले रितेश सिधवानी और फरहान अख्तर द्वारा प्रोड्यूस्ड है।

यह फिल्म कासिम जगमागिया और विशाल रामचंद्रनी द्वारा को-प्रोड्यूस्ड है। मिर्जापुरः द मूवी में पंकज त्रिपाठी (कालीन भैया), अली फजल (गुड्डू पंडित) और दिव्येंदु शर्मा (मुन्ना भैया) जैसे लोकप्रिय सितारों के साथ-साथ जितेंद्र कुमार और रवि किशन भी प्रमुख भूमिकाओं में शामिल हैं। 4 सितंबर 2026 को दुनिया भर के सिनेमाघरों में एक भव्य रिलीज के लिए तैयार है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित । शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website : aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com